Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

**अल्लाह तआला का आदेश**

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ وَيَزِيْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ

(सूरत अन्निसा आयत : 174)

अनुवाद : अत: वे लोग जो ईमान लाए और नेक-आमाल बजा लाए तो वे उनको उनका भरपूर प्रतिफल प्रदान करेगा और अपने फ़ज़ल से उनको मज़ीद देगा।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 6
अंक- 15

साप्ताहिक क़ादियान

# बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

2 रमज़ान 1442 हिज्री कमरी 15 शहादत 1400 हिज्री शम्सी 15 अप्रैल 2021 ई.

## अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

## आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें

### आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के तीन उपदेश

(1178) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि मेरे जानी दोस्त (आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने मुझे तीन बातों की ताकीद फ़रमाई मरने तक मैं नहीं छोड़ूँगा। हर महीना में तीन दिन रोज़ा रखना और चाशत (सूर्योदय से एक पहर तक का समय) की नमाज़ पढ़ना और वित्र पढ़ कर सोना।

### अपने घरों को क़ब्रें न बनाओ

(1187) हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : अपने घरों में भी कुछ नमाज़ें पढ़ा करो और उनको क़ब्रें न बनाओ।

### मस्जिद हराम और मस्जिद नब्वी की श्रेष्ठता

(1190) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : मेरी इस मस्जिद में (मस्जिद नब्वी, नक्ल करने वाला) एक नमाज़ उन हज़ार नमाज़ों से बेहतर है जो और जगह पढ़ी जाएं। मस्जिद हराम के अतिरिक्त।

(सही बुख़ारी, भाग 2 प्रकाशन क़ादियान 2006)

**अरबी भाषा सीखें क्योंकि अरबी भाषा के बिना कुरआन का मज़ा नहीं आता।**
**आदमी के लिए अनिवार्य है कि तौब: तथा इस्तिग़फार में लगा रहे और देखता रहे कि ऐसा न हो, बुरे कर्म सीमा से गुज़र जाएं और ख़ुदा तआला के क्रोध को खींच लाएं।**

## उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

22 अप्रैल 1899 ई

झूठ बोलने वाला कभी छूट नहीं पा सकता

हमारे दावा इलहाम तथा अल्लाह तआला से वार्तालाप के प्रचार को यूं तो बहुत साल व्यतीत हुए परन्तु यदि बराहीन के प्रकाशन से भी लिया जाए तो बीस वर्ष हो चुके। हमारे विरोधी जो हमको झूठा और अपने दावे में झूठ बोलने वाला क़रार देते हैं इन से कोई प्रश्न करे कि ख़ुदा तआला तो किसी ऐसे मुफ़्तरी को जो इस पर इलहाम और मुकालमा (वार्तालाप) का झूठ बोले छूट नहीं देता। यहां तक कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को भी फ़रमाया कि यदि तू कई बातें अपनी तरफ़ से कहता तो हम मुख्य रग से पकड़ लेते। फिर किसी और की क्या विशेषता हो सकती है? इससे साफ़ समझ में आता है कि अल्लाह तआला पर इलहाम का झूठ बोलने वाला कभी भी छूट नहीं पा सकता। अब हम पूछते हैं कि यदि यह हमारा सिलसिला ख़ुदा तआला का स्थापित किया नहीं है तो किसी जाति के इतिहास से हम को पता दो कि ख़ुदा तआला पर किसी ने झूठ बोला हो और फिर उसे छूट दी गई हो। हमारे लिए तो यह स्तर साफ़ है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ज़माना 23 साल तक का एक लम्बा ज़माना है। इस सच्चे और सम्पूर्ण नबी के ज़माना से लगभग मिलता हुआ ज़माना अल्लाह तआला ने अब तक हमको दिया। क्योंकि बराहीन के प्रकाशन पर बीस साल हुए जो हतभागे आरोप लगाने वालों के निकट झूठ का पहला ज़माना है। अब हम तो एक सच्चे मुस्लिम बल्कि समस्त सच्चों के सरताज सच्चे के ज़माना से मिलता हुआ ज़माना प्रस्तुत करते हैं और यह अत्याचारी अब तक भी कहे जाते हैं कि झूठ है। अफ़सोस हमारी विरोध के विचार में ये लोग यहां तक अंधे हो गए हैं कि उनको यह भी नज़र नहीं आता कि इस इन्कार का प्रभाव रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर कैसा पड़ता है। क्योंकि यदि बीस बाईस वर्ष तक भी ख़ुदा किसी मुफ़्तरी को मदद दे सकता है तो फिर मुझे तो आश्चर्य ही आता है। नहीं बल्कि दिल काँप उठता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो शेष पृष्ठ 12 पर

**इस्लाम केवल व्यक्तिगत सफ़लता का क़ायल नहीं, यदि हम सारी क़ौम को हर रंग में नहीं बढ़ाते तो मानों कि हम सफ़ल ही नहीं हुए**
**क़ौम की ख़बर नहीं लेना अत्याचार है क्योंकि ख़बर नहीं लेने से बुराई फिर लौट कर आती है, सफ़लता यह है कि सब सही मार्ग को इख़्तियार कर लें**

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु हूद आयत

فَاسْتَقِمْ كَمَآ اُمِرْتَ وَمَنْ تَابَ مَعَكَ وَلَا تَطْغَوْا ؕ اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ 113

की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

"इस आयत में भविष्य की औलाद की दुरुस्ती और उसकी तर्बीयत की ओर भी संकेत किया गया है। परन्तु अफ़सोस है कि इस बात की ओर बहुत कम लोग ध्यान देते हैं। बीहक़ी ने शेबुल ईमान में अबू अली सिरी से रिवायत की है कि अबू अली ने कहा

اَيْتُ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْمَنَامِ فَقُلْتُ يَا رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رُوِيَ اَنَّكَ قُلْتَ شَيَّبَنِي الْهُوْدُ قَالَ نَعَمْ قُلْتُ مَالَّذِيْ شَيَّبَكَ قَصَصُ الْاَنْبِيَاءِ وَهَلَاكُ الْاُمَمِ قَالَ لَا وَلٰكِنْ قَوْلُهٗ فَاسْتَقِمْ كَمَا اُمِرْتَ

मैंने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को स्वप्न में देखा और कहा की हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम लोग कहते हैं कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है मुझे सूरत हूद ने बूढ़ा कर दिया। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया हाँ। और मैंने अर्ज़ की किस बात ने आप शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

# सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की यूरोप की यात्रा, मई जून 2015 ई (भाग-7)

## सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का अख़बार DIE ZEIT को इंटरव्यू

**मस्जिदों का उद्घाटन एक धार्मिक फंक्शन है और इस धार्मिक फंक्शन में ऐसे लोगों का आना जिन का इस धर्म से कोई सम्बन्ध नहीं मेरे नज़दीक एक बहुत बड़ी बात है और यह इस बात का सबूत है कि आप लोग चाहते हैं कि इस शहर के लोग आपस में प्यार और मुहब्बत से मिल-जुल कर रहें।**

**अपने पड़ोसियों के हक़ अदा करना भी ज़रूरी है। मुहब्बत और प्यार की फ़िज़ा को पहले से ज़्यादा बेहतर करने की आवश्यकता है और यहां आने वाले प्रत्येक व्यक्ति को यह एहसास दिलाने की आवश्यकता है कि यह घर जो हमने ख़ुदा के नाम पर बनाया है सिर्फ इबादत करने वाला घर नहीं है। बल्कि यहां से मुहब्बत और प्यार की बातें आप तक पहुंचेंगी।**

**अमन ही असल चीज़ है और अमन से ही इन्सानियत की क़द्रें क़ायम होती हैं। और अमन क़ायम होता है मुहब्बत और प्यार और आपस के संबंध पैदा करने से और दूसरों की भावनाओं का खयाल रखने से।**

**मैं जमाअत अहमदिया के लोग को भी कहता हूँ कि अब यह मस्जिद बनने के बाद लोगों की नज़रें आप पर पहले से ज़्यादा होंगी। यह मस्जिद के दो मीनार जो आपने खड़े किए हैं ये केवल ख़ूबसूरती के लिए नहीं होने चाहिऐं बल्कि ये प्यार मुहब्बत और अमन का और ख़ुदाए वाहिद की इबादत, ख़ुदा तआला की ख़ातिर क़ुर्बानी करने का मार्ग होने चाहिऐं**

**(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)**

**(अनुवादक: सय्यद मुहयुद्दीन फ़रीद)**

इसके बाद मेंबर नैशनल पार्लियामेंट जर्मनी FRAU MULLER साहिबा ने अपना ऐडरैस प्रस्तुत करते हुए कहा

सम्माननीय ख़लीफतुल मसीह! आज मुझे इस बात की बहुत ख़ुशी है कि मैं अहमदिया मुस्लिम जमाअत की मस्जिद के उद्घाटन की समारोह में शामिल हूँ। यह ख़ुदा तआला का घर शहर में एक इज़ाफ़ा है। मस्जिद का बनाना इस बात को साबित करता है कि हम अमन और भाईचारे के साथ मिल-जुल कर रह सकते हैं।

आप का मोटो जो मल्टी फंक्शनल हाल में दीवार पर लगा है कि मुहब्बत सबके लिए नफ़रत किसी से नहीं यह इस बात का प्रकटन है कि जमाअत अहमदिया हमारी ओर अमन और मुहब्बत का हाथ बढ़ा रही है। उन्हों ने कहा कि इस्लाम धर्म जर्मनी में संख्या के लिहाज़ से तीसरे नंबर पर है। हमारे लिए एक साथन पर रहना काफ़ी नहीं बल्कि हमें मिल-जुल कर रहना हैं।

मस्जिद का निर्माण बताता है कि यह अहमदियों का वतन है। अहमदी एक दूसरे के सत्कार सम्मान पर-ज़ोर देते हैं। जमाअत अहमदिया एक मुनज़्ज़म जमाअत है और इस्लाम की शिक्षा को प्रत्येक ज़माने के लिहाज़ से ख़ूबसूरत रूप में प्रस्तुत करती है और आज सूबा HESSEN में मुस्लमान तन्ज़ीमों में से अहमदियों को ही यह हक़ प्राप्त है कि वह स्कूलों में इस्लाम की शिक्षा दे सकें ।

इसके बाद मेंबर नैशनल पार्लियामेंट जर्मनी FRAU SCHULZ ASCHE ने अपना ऐडरैस प्रस्तुत करते हुए कहा कि आज मुझे बहुत ख़ुशी है कि मैं मस्जिद के उद्घाटन के अवसर पर शामिल हों रही हूँ मुख़्तसर बात कर रही हूँ। इस से पूर्व FLOERSHEIM शहर की मस्जिद के उद्घाटन के अवसर पर भी उपस्थित थी।

उन्हों ने कहा जब इस्लाम की शिक्षा के बारे में डर पाया जाता हैं तो फिर यह ज़रूरी है कि हम सब मिल कर अमन का संदेश दें और आज यहां अहमदिया मस्जिद का बनना बताता है कि हम सब मिल-जुल कर अमन और मुहब्बत और भाई चारा के साथ रहना चाहते हैं और यह मस्जिद इस बात का भी स्पष्ट प्रकटन है कि यह अहमदियों का वतन है।

उन्हों ने इस बात का भी प्रकटन किया कि अहमदिया मुस्लिम जमाअत बिल्कुल समय के अनुसार इस्लाम की शिक्षा प्रस्तुत करती है और पुरुष और औरतों के हुक़ूक़, कर्तव्यों और मुसावात पर-ज़ोर देती है। उन्हों ने अपने ऐडरैस में कहा कि अहमदिया जमाअत अब तो हमारे लिए Indispensable हो गई है जिस का एक कारण जर्मन स्कूलों के लिए इस्लाम की शिक्षा का निसाब और फिर उस के अध्यन के लिए अध्यापक को तैयार करना है। जहां स्कूलों में दूसरे बच्चे इस्लाम की शिक्षा प्राप्त करते हैं वहां अहमदी बच्चे भी इस्लाम की शिक्षा प्राप्त करते हैं। जमाअत अहमदिया अपने विभिन्न प्रोग्रामों और मानवता की सेवा के कामों के माध्यम से तरक़्क़ी कर रही है और सेवा भी कर रही है। अंत में मेरी इच्छा है कि यह मस्जिद हम सब के मिलने-जुलने की जगह हो ताकि एक दूसरे को बेहतर तौर पर जान सकें।

इसके बाद नैशनल जर्मन पार्लियामेंट की मेंबर FRAU CHRISTINE BUCHHOLZ ने अपना ऐडरैस प्रस्तुत किया। उन्हों ने अपने विचारों का प्रकटन करते हुए कहा :

आज जमाअत अहमदिया के सदस्यों के लिए बहुत ख़ुशी का दिन है कि एक छोटे से कमरे में नहीं बल्कि एक बड़ी मस्जिद के अंदर अपने धर्म पर अमल कर सकें।

इस मस्जिद का बनना उन लोगों के लिए भी एक प्रभावित करने वाला निशान है जो कट्टरपंथी हैं और इन्सानों के मध्य फूट और नफ़रत डालते हैं।

मस्जिदों का उद्घाटन यह संदेश भी देता है कि सब को धार्मिक आज़ादी है कि अपने धर्म पर जिस तरह चाहें अमल करें

उन्हों ने कहा मस्जिद के उद्घाटन के हवाला से प्रैस में कुछ नकारात्मक बातें भी आई हैं। बजाय इस के कि हम ये नकारात्मक बातें करें, ज़रूरी बात यह है कि हम जमाअत अहमदिया के सकारात्मक कार्यों का वर्णन करें। उनकी ख़िदमात का वर्णन करें। उनके कामों का वर्णन करें कि किस तरह ये सेवा कर रहे हैं और एक दूसरे की सहायता कर रहे हैं।

हम उन चीज़ों पर बात करें जो सियास्तदान बात नहीं करते, पाकिस्तान में जमाअत को अत्याचारों का निशाना बनाया जा रहा है। सऊदी अरब में भी अहमदिया जमाअत के लोग पर अत्याचार होते हैं। हमें चाहिए कि हमारे सियास्तदान ऐसे विषयों में अहमदियों की सहायता करें। यहां केस पास होने के बाद उनकी फ़ैमिलीज़ को बुलवाने में सहायता दें। मैं आशा करती हूँ कि अब हमारे मेल-जोल और बढ़ेगा और इस मस्जिद के बनने से हमारा सम्बन्ध और भी अच्छा होगा।

मेहमानों के ऐडरैसिज़ के बाद सात बज कर पच्चीस मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला ने भाषण फ़रमाया :

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने तशह्हुद व तावुज़ और तसमीया के बाद फ़रमाया :

समस्त संमानित मेहमानों को अस्सलामो अलैकुम

शेष पृष्ठ 9 पर

# ख़ुत्बः जुमअः

**हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया : कोई उम्मत बिना सरदार के तरक़्क़ी नहीं कर सकती और यदि कोई इमाम न हो तो जमाअत का समस्त काम ख़राब और बर्बाद हो जाएगा**

## आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा राशिद ज़ूनुरैन हज़रत उस्मान बिन अफ्फान रज़ियल्लाहु अन्हु की विशेषताओं का वर्णन

**हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को वसी क़रार देने वाला गिरोह, हक़ की हिमायत और अहल-ए-बैत की मुहब्बत की ख़ातिर अपने घरों से नहीं निकला था बल्कि ये लोग अपने भौतिक उद्देश्य को पूरा करने के लिए आए थे**

**चार मरहूमीन आदरणीय मौलवी मुहम्मद नजीब ख़ान साहब नायब नाज़िर दावत इलल्लाह दक्षिण भारत क़ादियान, आदरणीय नज़ीर अहमद ख़ादिम साहिब पुत्र चौधरी अहमद दीन साहिब चठ्ठा,अल्हाज डाक्टर नाना मुस्तफ़ा उटी बवाटिंग साहिब आफ़ घाना और आदरणीय ग़ुलाम नबी साहिब इब्न फ़ज़ल दीन साहिब रब्वा का ज़िक्र-ए-ख़ैर और नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब**

---

**ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बि-नस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 05 मार्च 2021 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)**

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَ رَسُوْلُهُ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के विरुद्ध जो उपद्रव उठा था इस बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने जो वर्णन फ़रमाया है उसका वर्णन हो रहा था। इस बारे में मज़ीद फ़रमाते हैं और ज़्यादा-तर हवाले आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने तिबरी से लेकर फिर उनका शुद्धिकरण किया है या उसके अनुसार आगे अपना जो दृष्टिकोण है और जो अलग-अलग किया है वह पेश किया है। आप रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि ये तीन लोग अर्थात मुहम्मद बिन अबू बकर, मुहम्मद बिन हुज़ैफ़ा और अम्मार बिन यासिर जो थे ये बाग़ीयों के साथ मिल गए थे, उनकी बातों में आ गए थे। फ़रमाया कि इसके अतिरिक्त अन्य व्यक्ति अहल-ए-मदीना में से सहाबी हो या ग़ैर सहाबी उन उपद्रवियों के हमदरद नहीं थे और हर एक व्यक्ति उन पर लानत मलामत करता था परन्तु उनके हाथ में उस वक़्त व्यवस्था नहीं थी। ये किसी की मलामत की पर्वा नहीं करते थे। बीस दिन तक ये लोग अर्थात मुख़ालिफ़ीन जो थे ये केवल ज़बानी तौर पर कोशिश करते रहे कि किसी तरह हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु खिलाफ़त से अलग हो जाएं परन्तु हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस से साफ़ इंकार कर दिया और फ़रमाया कि जो क़मीज़ मुझे ख़ुदा तआला ने पहनाई है मैं उसे उतार नहीं सकता और न उम्मते मुहम्मदिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बे पनाह छोड़ सकता हूँ कि जिस का जो जी चाहे दूसरे पर जुलम करे। उन लोगों को, बाग़ीयों को भी यह समझाते रहे कि इस उपद्रव से रुक जाऐं और फ़रमाते रहे कि आज ये लोग उपद्रव करते हैं और मेरी ज़िंदगी से बेज़ार हैं। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया ये लोग जो आज उपद्रव कर रहे हैं और मेरी ज़िंदगी से बेज़ार हैं परन्तु जब मैं नहीं रहूँगा तो इच्छा करेंगे कि काश उस्मान की आयु का एक-एक दिन एक-एक वर्ष से बदल जाता और वह हम से जल्द विदा न होता क्योंकि मेरे बाद सख़्त ख़ूँरेज़ी होगी और हुक़ूक़ नष्ट किए जाएंगे और व्यवस्था कुछ की कुछ बदल जाएगी। इसलिए बनू उमय्या के ज़माने में खिलाफ़त हुकूमत से बदल गई और उन उपद्रवियों को ऐसी सज़ाएं मिलीं कि सब शरारतें उनकी भूल गईं।

बहरहाल बीस दिन गुज़रने के बाद ये मुख़ालिफ़ीन जो थे, बाग़ी जो थे उन लोगों को ख़्याल हुआ कि जल्द ही कोई फ़ैसला करना चाहिए ताकि ऐसा न हो कि प्रान्तों से फ़ौजें आ जाएं और हमें अपने आमाल की सज़ा भुगतनी पड़े। पता था कि हम ग़लत हैं और अधिकतर जो मुस्लमा हैं वे हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ है। इसलिए उन्होंने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का घर से निकलना बंद कर दिया और खाने पीने की चीज़ों का अंदर जाना भी रोक दिया और समझे कि शायद इस तरह मजबूर हो कर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु हमारी मांगों को क़बूल कर लेंगे लेकिन आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने तो फ़रमाया था कि जो क़मीज़ मुझे अल्लाह तआला ने पहनाई है वह मैं किस तरह उतार सकता हूँ। बहरहाल मदीना की व्यवस्था उन्ही लोगों के हाथ में थी और उन्होंने मिल कर मिस्र की फ़ौजों के सरदार ग़ाफ़िक़ी को अपना सरदार स्वीकार कर लिया था। इस तरह मदीना का हाकिम मानों उस वक़्त ग़ाफ़िक़ी था और कूफ़ा की फ़ौज का सरदार अश्तर था और बस्रा की फ़ौज का सरदार हकीम बिन जब्ला था, वही डाकू जिसे अहले ज़िम्मा के माल लूटने पर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने बस्रा में नज़रबंद कर देने का हुक्म दिया था। वह डाकू सरदार बन गया था। दोनों ग़ाफ़िक़ी के अधीन काम करते थे। हकीम बिन जब्ला भी और अश्तर भी ग़ाफ़िक़ी के अधीन काम करने लगे और आप रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि इस से एक दफ़ा फिर यह बात साबित हो गई कि इस फ़ित्ने की जड़ मिस्री थे जहां अब्दुल्लाह बिन सबाह काम कर रहा था।

मस्जिद नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में ग़ाफ़िक़ी नमाज़ पढ़ाता था और रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साहाबा रज़ियल्लाहो अन्हो अपने घरों में नज़र बंद रहते या उसके पीछे नमाज़ अदा करने पर मजबूर थे। जब तक उन लोगों ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के घर का घेराव करने का फ़ैसला नहीं किया था तब तक तो लोगों से ज़्यादा वाद-विवाद नहीं करते थे परन्तु घेराव करने के साथ ही इन उपद्रवियों ने दूसरे लोगों पर भी सख़्तियां शुरू कर दीं। अब मदीना दारुल आमान के अतिरिक्त दारुल हर्ब हो गया था। मदीना वालों का सम्मान और प्रतिष्ठा ख़तरे में थी और कोई व्यक्ति हथयारों के बिना घर से नहीं निकलता था और जो व्यक्ति उनका मुक़ाबला करता उसे ये लोग क़तल कर देते थे। जब उन लोगों ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का घेराव कर लिया और पानी तक अंदर जाने से रोक दिया तो हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने एक पड़ोसी के लड़के को हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु और उम्माहातुल मौमीनी की तरफ़ भेजा कि इन लोगों ने हमारा पानी भी बंद कर दिया है। आप लोगों से यदि कुछ हो सके तो कोशिश करें और हमें पानी पहुंचाएं। मर्दों में सबसे पहले हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु आए और आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन लोगों को समझाया कि तुम लोगों ने क्या रवैय्या अपनाया है। तुम्हारा अमल तो न मोमिनों से मिलता है न काफ़िरों से। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के घर में खाने पीने की चीज़ें मत रोको। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनको फ़रमाया कि रोम और फ़ारस के लोग भी क़ैद करते हैं तो खाना खिलाते हैं और पानी पिलाते हैं और इस्लामी तरीक़ के अनुसार तो तुम्हारा यह कार्य किसी तरह भी वैध नहीं क्योंकि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है कि तुम उनको क़ैद कर देने और क़तल कर देने को वैध समझने लगे हो। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की इस नसीहत का उन पर कोई प्रभाव नहीं हुआ और उन्होंने साफ़-साफ़ कह दिया कि चाहे कुछ हो जाए हम इस व्यक्ति तक दाना-पानी नहीं पहुंचने देंगे। यह वह जवाब था जो उन्होंने उस व्यक्ति को दिया जिसे वह रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का वसी और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का हक़ीक़ी उत्तराधिकारी क़रार देते थे। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में ही कहते थे कि यह हक़ीक़ी उत्तराधिकारी है, और उनको यह जवाब मिल रहा है। और क्या इस जवाब के बाद किसी और

शहादत की भी इस बात को साबित करने के लिए ज़रूरत बाकी रह जाती है कि यह हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को वसी क़रार देने वाला गिरोह हक़ की हिमायत और अहल-ए-बैत की मुहब्बत की ख़ातिर अपने घरों से नहीं निकला था बल्कि ये लोग अपने भौतिक उद्देश्य को पूरा करने के लिए आए थे।

उम्माहातुल मौमीनी में से सबसे पहले हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा आप की सहायता के लिए आईं। एक ख़च्चर पर आप रज़ियल्लाहु अन्हा सवार थीं। आप रज़ियल्लाहु अन्हा आपने साथ एक मशकीज़ा पानी का भी लाई लेकिन असल उद्देश्य आप रज़ियल्लाहु अन्हा का यह था कि बनू उमय्या के अनाथों और विधवाओं की वसीयतें हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के पास थीं और आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने जब देखा कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का पानी बाग़ीयों ने बंद कर दिया है तो आप रज़ियल्लाहु अन्हा को भय हुआ कि वे वसाया भी कहीं नष्ट न हो जाएं और आप रज़ियल्लाहु अन्हा ने चाहा कि किसी तरह वे वसाया महफ़ूज़ कर ली जाएं अन्यथा पानी आप रज़ियल्लाहु अन्हा किसी और ढंग से भी पहुंचा सकती थीं। जब आप रज़ियल्लाहु अन्हा हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के दरवाज़े तक पहुंचीं तो बाग़ीयों ने आप रज़ियल्लाहु अन्हा को रोकना चाहा। लोगों ने बताया कि यह उम्मु मौमीनी उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा हैं परन्तु इस पर भी वे लोग रुके नहीं और आप रज़ियल्लाहु अन्हा के ख़च्चर को मारना शुरू किया। उम्मु मौमीनी उम्म हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा ने उन लोगों को, बाग़ीयों को फ़रमाया कि मैं डरती हूँ कि बनू उमय्या के अनाथों और विधवाओं की वसाया नष्ट न हो जाएं इसलिए अंदर जाना चाहती हूँ ताकि उनकी हिफ़ाज़त का सामान कर दूं। परन्तु इन बदबख़्तों ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पत्नी श्रीमती को जवाब दिया कि तुम झूठ बोलती हो और आप रज़ियल्लाहु अन्हा के ख़च्चर पर हमला करके उसके पालान के रस्से काट दिए और ज़ीन उलट गई और क़रीब था कि हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा गिर कर उन उपद्रवियों के पैरों के नीचे रौंद कर शहीद हो जातीं कि कुछ मदीना वालों ने जो क़रीब थे झपट कर आप रज़ियल्लाहु अन्हा को सँभाला और घर पहुंचाया।

यह वह व्यवहार था जो उन लोगों ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पत्नी से किया। हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से ऐसा इख़लास और इशक़ रखती थीं कि जब पंद्रह सोला वर्ष की जुदाई के बाद, मात पिता से जो उनकी जुदाई थी उसके बाद जब आप रज़ियल्लाहु अन्हा के पिता जो अरब के सरदार थे और मक्का में एक बादशाह की हैसियत रखते थे एक ख़ास राजनीतिक मिशन पर मदीना आए और आप रज़ियल्लाहु अन्हा (उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा) को मिलने के लिए भी गए तो आपने उनके नीचे से रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का बिस्तर खींच लिया। जब वह बैठने तो नीचे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का बिस्तर बिछा हुआ था। जब आप रज़ियल्लाहु अन्हा का बाप बैठने लगा तो आप रज़ियल्लाहु अन्हा ने बिस्तर खींच लिया इसलिए कि ख़ुदा के रसूल के पवित्र कपड़े से एक मुशरिक के अपवित्र शरीर को छूते हुए देखना आप रज़ियल्लाहु अन्हा की बर्दाश्त की ताकत से बाहर था, बाप को भी नहीं बैठने दिया। आश्चर्य है कि हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा ने तो मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पीछे आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कपड़ों तक की पवित्रता का ख़्याल रखा परन्तु इन उपद्रवियों ने मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पीछे में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पत्नी की पवित्रता का भी ख़्याल नहीं किया। नादानों ने कहा कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पत्नी झूठी हैं हालाँकि जो कुछ उन्होंने फ़रमाया था वह दरुस्त था।

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु बनू उमय्या के अनाथों के वली थे और उन लोगों की बढ़ती हुई दुश्मनी को देख कर आप रज़ियल्लाहु अन्हा का भय दरुस्त था। उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा का भय दरुस्त था कि अनाथों और विधवाओं की सम्पत्तियाँ ज़ाए न हो जाएं। झूठे वे थे जिन्हों ने मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत का दावा करते हुए उनके दीन की तबाही का बीड़ा उठाया हुआ था, न उम्मुल मोमनीन उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा। आप रज़ियल्लाहु अन्हा झूठी नहीं थीं। हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा के साथ जो कुछ व्यवहार किया गया था जब उस की ख़बर मदीना में फैली तो सहाबा और अहल-ए-मदीना हैरान रह गए और समझ लिया कि अब उन लोगों से किसी प्रकार की ख़ैर की उम्मीद रखनी फ़ुज़ूल है। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने उसी वक़्त हज का इरादा कर लिया और यात्रा की तैयारी शुरू कर दी। जब लोगों को मालूम हुआ कि आप रज़ियल्लाहु अन्हा मदीना से जाने वाली हैं तो कुछ ने आप रज़ियल्लाहु अन्हा से निवेदन किया कि यदि आप रज़ियल्लाहु अन्हु यहीं ठहरें तो शायद उपद्रव को रोकने में कोई सहायता मिले और बाग़ीयों पर कुछ प्रभाव हो परन्तु उन्होंने इंकार कर दिया और फ़रमाया कि क्या तुम चाहते हो कि मुझ से भी वही व्यवहार हो जो उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा से हुआ है। ख़ुदा की क़सम! मैं अपने सम्मान को ख़तरे में नहीं डाल सकती क्योंकि वह रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सम्मान थीं। यदि किसी प्रकार का व्यवहार मुझ से किया गया तो मेरी हिफ़ाज़त की क्या वयवस्था होगा? ख़ुदा ही जानता है कि ये लोग अपनी शरारतों में कहाँ तक तरक़्क़ी करेंगे और उनका क्या अंजाम होगा। हज़रत आयशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु अन्हा ने चलते-चलते एक ऐसी तदबीर की, जब हज पर जाने लगें तो एक ऐसी तदबीर की जो यदि कारगर हो जाती तो शायद उपद्रव में कुछ कमी हो जाती और वह तदबीर यह थी कि अपने भाई मुहम्मद बिन अबी बकर को कहला भेजा जो अपनी अज्ञानता के कारण से या छोटे होने की वजह से, कमज़ोर ईमान की वजह से उन बाग़ीयों के साथ थे कि तुम भी मेरे साथ हज को चलो परन्तु उन्होंने इंकार कर दिया। इस पर हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया क्या करूँ बेबस हूँ। यदि मेरी ताक़त होती तो उन लोगों को अपने इरादों में कभी कामयाब न होने देती। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा तो हज पर तशरीफ़ ले गईं और कुछ सहाबा भी जिन से मुम्किन हो सका और मदीना से निकल सके मदीना से तशरीफ़ ले गए और अन्य लोग अतिरिक्त कुछ बड़े सहाबा के अपने घरों में बैठे रहे और आख़िर में हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को भी यह महसूस हो गया कि ये लोग नरमी से मान नहीं सकते और आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक पत्र समस्त मदीने के प्रान्त के हाकिमों के नाम रवाना किया जिसका ख़ुलासा यह था कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के बाद बिना किसी इच्छा या निवेदन के मुझे उन लोगों में शामिल किया गया था जिन्हें खिलाफ़त के सम्बन्ध में मश्वरा करने का काम सपुर्द किया गया था। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने जो पत्र लिखा उस में यह फ़रमाया। फिर फ़रमाया फिर बिना मेरी इच्छा या मांगने के मुझे खिलाफ़त के लिए चुना गया और मैं बराबर वह काम करता रहा जो मुझसे पहले के खलि़फ़ा करते रहे और मैंने अपने पास से कोई बिद्दत (धर्म में नई बात) नहीं निकाली लेकिन कुछ लोगों के दिलों में बुराई का बीज बोया गया और शरारत पैदा हुई और उन्होंने मेरे विरुद्ध योजनाएं बनानी शुरू कर दी और लोगों के सामने कुछ ज़ाहिर किया और दिल में कुछ और रखा और मुझ पर वे आरोप लगाने शुरू किए जो मुझ से पहले के खलि़फ़ा पर भी लगते थे लेकिन मैं जानते हुए ख़ामोश रहा और ये लोग मेरे रहम से नाजायज़ लाभ उठा कर शरारत में और भी बढ़ गए और आख़िर कुफ़्फ़ार की तरह मदीना पर हमला कर दिया। अत: आप लोग यदि कुछ कर सकें तो सहायता की व्यवस्था करें।

इसी तरह एक पत्र, जिसका ख़ुलासा अर्थ इस तरह है, जो हज पर आने वालों के नाम लिख कर कुछ दिनों के बाद मक्का में रवाना किया। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने हाजियों के लिए लिखा कि मैं आप लोगों को ख़ुदा तआला की तरफ़ तवज्जा दिलाता हूँ और उसके इनामात याद दिलाता हूँ। इस वक़्त कुछ लोग उपद्रव कर रहे हैं और इस्लाम में फूट डालने की कोशिश में व्यस्त हैं परन्तु उन लोगों ने यह भी नहीं सोचा कि ख़लीफ़ा ख़ुदा बनाता है जैसा कि वह फ़रमाता है وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْاَرْضِ (नूर 56) अर्थात अल्लाह तआला ने तुम में से ईमान लाने वालों और मुनासिब-ए-हाल अमल करने वालों से वादा किया है कि वह उनको ज़मीन में ख़लीफ़ा बना देगा और इत्तिफ़ाक़ की क़दर नहीं करते। फ़रमाया कि और इत्तिफ़ाक़ की क़दर नहीं करते हालाँकि ख़ुदा तआला ने हुक्म दिया है कि وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعًا (आल-ए-इमरान 104) कि तुम सब अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से पकड़ लो। फिर आपने फ़रमाया और मुझ पर आरोप लगाने वालों की बातों को क़बूल किया और क़ुरआन-ए-करीम के इस हुक्म की परवाह न की कि يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ جَآءَكُمْ فَاسِقٌۢ بِنَبَاٍ فَتَبَيَّنُوْۤا (अल्हुज़रात : 7 ) अर्थात हे मोमिनो यदि तुम्हारे पास कोई झूठा व्यक्ति महत्वपूर्ण ख़बर लाए तो उसकी तहक़ीक़ कर लिया करो। फिर फ़रमाया कि और मेरी बैअत का अदब नहीं किया हालाँकि अल्लाह तआला रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की निसबत फ़रमाता है कि اِنَّ الَّذِيْنَ يُبَايِعُوْنَكَ اِنَّمَا يُبَايِعُوْنَ اللّٰهَ (फ़तह : 11) अर्थात वे लोग जो तेरी बैअत करते हैं वे केवल अल्लाह की बैअत करते हैं। फ़रमाया और मैं रसूले करीम

सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नायब हूँ अर्थात यही हुक्म जो है यही बात जो है मुझ पर भी लागू होती है कि मैं रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नायब हूँ। कोई उम्मत बिना सरदार के तरक़्क़ी नहीं कर सकती और यदि कोई इमाम न हो तो जमाअत का समस्त काम ख़राब और बर्बाद हो जाएगा। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने आगे तहरीर फ़रमाया कि ये लोग उम्मते इस्लामीया को तबाह और बर्बाद करना चाहते हैं और इसके अतिरिक्त उनका कोई उद्देश्य नहीं क्योंकि मैंने उनकी बात को क़बूल कर लिया था और वालियों के बदलने का वादा कर लिया था परन्तु उन्होंने इस पर भी शरारत न छोड़ी। अब ये तीन बातों में से एक की मांग करते हैं। ये तीन मुतालिबे उन्होंने, बाग़ीयों ने सामने रखे थे। प्रथम यह कि जिन लोगों को मेरे समय में सज़ा मिली है उन सबका बदला मुझ से लिया जाए। यदि यह मुझे मंज़ूर न हो तो फिर खिलाफ़त को छोड़ दूं। यदि मैं लोगों से बदला नहीं लेता जिनको सज़ा दी है तो फिर मैं खिलाफ़त को छोड़ दूं और ये लोग मेरी जगह किसी और को मुक़र्रर कर दें। यह भी न मानूँ तो फिर ये लोग धमकी देते हैं कि ये लोग अपने समस्त हम-ख़याल लोगों को पैग़ाम भेजेंगे कि मेरी इताअत से बाहर हो जाएं।

पहली बात का तो यह जवाब है कि मुझ से पहले खलिफ़ा भी कभी फ़ैसलों में ग़लती करते थे परन्तु उनको कभी सज़ा नहीं दी गई। जो ग़लत फ़ैसले भी हुए उनके क़िसास पहले खलिफ़ा ने नहीं दिए। न उनको किसी प्रकार की कोई सज़ा मिली और इसी तरह मैंने किया है और इस क़दर सज़ाएं मुझ पर जारी करने का अर्थ मुझे मारने के अतिरिक्त और क्या हो सकता है! ये बातें तुम जो कर रहे हो कि क़िसास दो या सज़ा लो तो इस का अर्थ केवल यह है कि तुम मुझे मारना चाहते हो। फिर फ़रमाया खिलाफ़त से हटने का जवाब मेरी ओर से यह है कि यदि ये लोग लोहे की कंघी से नोच नोच के मेरी बोटिया कर दें तो यह मुझे मंज़ूर है परन्तु खिलाफ़त से मैं जुदा नहीं हो सकता। अल्लाह तआला ने क़मीज़ पहनाई है कभी नहीं हो सकता कि छोड़ दूं। बाकी रही तीसरी बात कि फिर ये लोग अपने आदमी चारों तरफ़ भेजेंगे कि कोई मेरी बात न माने। अत: मैं ख़ुदा की तरफ़ से ज़िम्मेदार नहीं हूँ। यदि ये लोग एक कार्य शरीयत के विरुद्ध करना चाहते हैं तो करें। पहले भी जब उन्होंने मेरी बैअत की थी तो उन पर मैंने जबर नहीं किया था। उनको मजबूर नहीं किया था कि ज़रूर मेरी बैअत करो। जो व्यक्ति अह्द तोड़ना चाहता है मैं उसके इस फ़ेअल पर प्रसन्न नहीं न ख़ुदा तआला प्रसन्न है। अब वादे को तोड़ना चाहते हो तो तोड़ो। मैं ने न पहले जबर किया था न अब जबर करूँगा। हाँ मेरी इच्छा बहरहाल नहीं। यह बहरहाल ग़लत काम है और अल्लाह तआला भी इस पर प्रसन्न नहीं है। हाँ वे अपनी तरफ़ से जो चाहे करे। क्योंकि हज के दिन क़रीब आ रहे थे और चारों तरफ़ से लोग पवित्र मक्का में जमा हो रहे थे। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस ख़्याल से कि कहीं वहां भी ये बाग़ी कोई उपद्रव खड़ा न करें और इस ख़्याल से भी कि हज के लिए जमा होने वाले मुस्लमानों में मदीना वालों की सहायता की तहरीक करें, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु को हज का अमीर बना कर रवाना फ़रमाया। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी अर्ज़ किया कि इन लोगों से जिहाद करना मुझे ज़्यादा पसंद है। आप रज़ियल्लाहु अन्हु मझे हज के लिए अमीर बना के भेज रहे हैं लेकिन मेरी इच्छा यह है कि मैं इन लोगों से जिहाद करूँ परन्तु हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनको मजबूर किया कि वे हज के लिए जाएँ और हज के दिनों में अमीर हज का काम करें ताकि उपद्रवी वहां अपनी शरारत न फैला सकें और वहां जमा होने वाले लोगों में भी मदीना के लोगों की सहायता की तहरीक की जाए और ऊपर वर्णित पत्र आप ही के हाथ रवाना किया।

जब इन पत्रों का उन उपद्रवियों को इलम हुआ तो उन्होंने और भी सख़्ती करनी शुरू कर दी और इस बात का अवसर तलाश करने लगे कि किसी तरह लड़ाई का कोई बहाना मिल जाए तो हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को शहीद कर दें परन्तु उनकी समस्त कोशिशें फ़ुज़ूल जाती थीं और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु उनको कोई अवसर शरारत का मिलने न देते थे। आख़िर तंग आकर ये तदबीर सूझी कि जब रात पड़ती और लोग सो जाते तो ये लोग हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के घर में पत्थर फेंकते और इस तरह अहल-ए-ख़ाना को जोश दिलाते ताकि जोश में आ कर वे भी पत्थर फैंकें तो लोगों को कह सकें कि देखो उन्होंने हम पर हमला किया है इसलिए हम भी जवाब देने पर मजबूर हैं परन्तु हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने समस्त अहल-ए-ख़ाना को जवाब देने से रोक दिया। कुछ जवाब नहीं देना। एक दिन अवसर पा कर दीवार के पास हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु तशरीफ़ लाए और फ़रमाया कि लोगो! मैं तो तुम्हारे निकट तुम्हारा गुनाह-गार हूँ, तुम समझते हो नाँ मुझे गुनाह-गार तो गुनाह-गार हूँ परन्तु दूसरे लोगों ने क्या क़सूर किया है? तुम समझते हो कि मैं गुनाहगार हूँ तो फिर मुझ से जो ज़्यादती करनी है करो। दूसरे लोगों ने क्या क़सूर किया है कि तुम पत्थर फेंकते हो। इस से दूसरों को भी चोट लगने का ख़तरा होता है। उन्होंने साफ़ इंकार कर दिया कि हमने पत्थर नहीं फेंके। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि यदि तुम नहीं फेंकते तो और कौन फेंकता है? उन्होंने कहा कि ख़ुदा तआला फेंकता होगा نَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ ذَالِكَ नऊज़ूबिल्लाह (हम इस से ख़ुदा की शरण चाहते हैं) हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि तुम लोग झूठ बोलते हो। यदि ख़ुदा तआला हम पर पत्थर फेंकता तो उसका कोई पत्थर ख़ाली न जाता। यह न होता कि उसका निशाना उचक जाता लेकिन तुम्हारे फेंके हुए पत्थर तो इधर उधर जा पड़ते हैं। यह फ़र्मा कर आप उनके सामने से हट गए।

जबकि सहाबा को अब हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के पास जमा होने का अवसर नहीं दिया जाता था परन्तु फिर भी वे अपने फ़र्ज़ से ग़ाफ़िल नहीं थे। मस्लहत-ए-वक़्त के अधीन उन्हों ने दो हिस्सों में अपना काम तक़सीम किया हुआ था। जो बड़ी आयु के थे, बूढ़े थे और जिन का अख़लाक़ी प्रभाव लोगों पर ज़्यादा था वे तो अपने समय को लोगों को समझाने पर खर्च करते और जो लोग ऐसा कोई प्रभाव नहीं रखते थे या नौजवान थे वे हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की हिफ़ाज़त की कोशिश में लगे रहते। प्रथम वर्णित जमाअत में से हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत साअद बिन वकास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़ारस के विजेता उपद्रव के कम करने में सबसे ज़्यादा आगे थे। विशेषता हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु तो उस उपद्रव के दिनों में अपने समस्त काम छोड़ कर इस काम में लग गए थे। इसलिए इन वाक़ियात के गवाहों में से एक व्यक्ति अबदुर्रहमान नामी वर्णन करता है कि उन दिनों उपद्रव में मैं ने देखा है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने समस्त काम छोड़ दिए थे और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के दुश्मनों का ग़ज़ब ठंडा करने और आप रज़ियल्लाहु अन्हु की तकालीफ़ दूर करने की फ़िक्र में ही रात-दिन लगे रहते थे। एक दफ़ा आप रज़ियल्लाहु अन्हु तक पानी पहुंचने में कुछ देर हुई तो हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु पर जिन के सपुर्द यह काम था हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु अत्यधिक नाराज़ हुए और उस वक़्त तक आराम नहीं किया जब तक पानी हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के घर में पहुंच नहीं गया। दूसरा गिरोह एक-एक दो-दो करके जिस जिस वक़्त अवसर मिलता था तलाश कर के हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु या आप रज़ियल्लाहु अन्हु के पड़ोसी के घरों में जमा होना शुरू हो गए और उसने इस बात का पुख़्ता इरादा कर लिया कि हम अपनी जानें दे देंगे परन्तु हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की जान पर आँच न आने देंगे। इस गिरोह में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु की औलाद के अतिरिक्त स्वयं साहाबा रज़ियल्लाहो अन्हो में से भी एक जमाअत शामिल थी। ये लोग रात और दिन हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के मकान की हिफ़ाज़त करते थे और आप रज़ियल्लाहु अन्हु तक किसी दुश्मन को पहुंचने नहीं देते थे और जबकि ये थोड़ी संख्या इस क़दर बड़ी संख्या का मुक़ाबला तो नहीं कर सकती थी परन्तु चूँकि बाग़ी चाहते थे कि कोई बहाना ढूँढ कर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को क़तल करें वे भी इस क़दर ज़ोर न देते थे। उस वक़्त के हालात से हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की इस्लामी ख़ैर ख़्वाही पर जो रोशनी पड़ती है इससे अक़्ल दंग रह जाती है। तीन हज़ार के क़रीब बाग़ीयों का लश्कर आप रज़ियल्लाहु अन्हु के दरवाज़े के सामने पड़ा है और कोई तदबीर इससे बचने की नहीं परन्तु जो लोग आप रज़ियल्लाहु अन्हु को बचाने की कोशिश करना चाहते हैं उन को भी आप रज़ियल्लाहु अन्हु रोकते हैं कि जाओ अपनी जानों को ख़तरे में न डालो। इन लोगों को केवल मुझ से दुश्मनी है तुम से कोई विवाद नहीं। आप रज़ियल्लाहु अन्हु की आँख उस वक़्त को देख रही थी जबकि इस्लाम इन उपद्रवियों के हाथों से एक बहुत बड़े ख़तरे में होगा और केवल ज़ाहिरी इत्तिहाद ही नहीं बल्कि रुहानी व्यवस्था भी तितर-बितर होने के क़रीब हो जाएगे और आप रज़ियल्लाहु अन्हु जानते थे कि उस वक़्त इस्लाम की हिफ़ाज़त और उसके क़ियाम के लिए एक-एक सहाबी की ज़रूरत होगी। अत: आप रज़ियल्लाहु अन्हु नहीं चाहते थे कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु की जान बचाने की व्यर्थ की कोशिश में सहाबा की जानें जाएँ और सब को यही नसीहत करते थे कि इन लोगों से विवाद न करो और चाहते थे कि जहां तक हो सके भविष्य में उपद्रवों को दूर करने के लिए वह जमाअत सुरक्षित रहे जिस

ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सोहबत पाई है परन्तु आप रज़ियल्लाहु अन्हु के समझाने के अतिरिक्त जिन सहाबा को आप रज़ियल्लाहु अन्हु के घर तक पहुंचने का अवसर मिल जाता वे अपने फ़र्ज़ का निर्वाह करने से पीछे नहीं हटते थे और भविष्य के ख़तरात पर वर्तमाना के ख़तरे को पहले रखते और यदि उनकी जानें उस समय महफ़ूज़ थीं तो केवल इसलिए कि उन लोगों को जल्दी की कोई ज़रूरत मालूम नहीं होती थी। अर्थात उन लोगों को जो बाग़ी थे जल्दी की कोई ज़रूरत महसूस नहीं होती थी और बहाने की तलाश थी। बहाना यह था कि उस दिन हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु पर हमला करें।

लेकिन वह वक़्त भी आख़िर आ गया जबकि ज़्यादा इंतिज़ार करना नामुमकिन हो गया क्योंकि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के दिल को हिला देने वाला वह पैग़ाम जो आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज पर जमा होने वाले मुस्लमानों को भेजा था हज्जाज की भीड़ में सुना दिया गया और वादी मक्का एक किनारे से दूसरे किनारे तक उसकी आवाज़ से गूंज रही थी। और हज पर जमा होने वाले मुस्लमानों ने फ़ैसला कर लिया था कि वे हज के बाद जिहाद के सवाब से भी महरूम नहीं रहेंगे और मिस्री उपद्रवियों और उनके साथीयों का अंत करके छोड़ेंगे। उपद्रवियों के जासूसों ने उन्हें इस इरादे की इत्तिला दे दी और अब इन उपद्रवियों के कैंप में सख़्त घबराहट के आसार थे। यहाँ तक कि उनमें छुप छुप कर बाते होने लगी थीं कि अब इस व्यक्ति के क़तल के अतिरिक्त कोई चारा नहीं और यदि उसे हमने क़तल न किया तो मुस्लमानों के हाथों से हमारे क़तल में अब कोई शुबा नहीं। इस घबराहट को इस ख़बर ने और भी दो-बाला कर दिया कि शाम और कूफ़ा और बस्रा में भी हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के पत्र पहुंच गए हैं और वहां के लोग जो पहले से ही हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के आदेशों के मुंतज़िर थे उन पत्रों के पहुंचने पर और भी जोश से भर गए हैं और साहाबा रज़ियल्लाहो अन्हो ने अपनी ज़िम्मेदारी को महसूस करके मस्जिदों और मज्लिसों में समस्त मुस्लमानों को उनके फ़रायज़ की तरफ़ तवज्जा दिला कर उन उपद्रवियों के विरुद्ध जिहाद का फ़तवा दे दिया है और वह कहते हैं कि जिसने आज जिहाद नहीं किया उसने मानो कुछ भी नहीं किया। कूफ़ा में उक्बा बिन अमर, अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ और हनज़ल बिन रबीअ अल् तमीमी और अन्य सहाबा किराम रज़ियल्लाहो अन्हो ने लोगों को मदीना वालों की सहायता के लिए उभारा है तो बस्रा में इमरान बिन हुसैन, अंस बिन मालिक, हश्शाम बिन आमिर और अन्य सहाबा ने। शाम में यदि उबादाह बिन सामित, अबू उमामा और अन्य साहाबा रज़ियल्लाहो अन्हो ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की आवाज़ पर लब्बैक कहने पर लोगों को उकसाया है तो मिस्र में ख़ारिजा और अन्य लोगों ने और सब मुल्कों से फ़ौजें इकट्ठी हो कर मदीना की तरफ़ बढ़ती चली आती हैं। उद्देश्य इन ख़बरों से बाग़ीयों की घबराहट और भी बढ़ गई। आख़िर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के घर पर हमला करके ज़बरदस्ती अंदर दाख़िल होना चाहा। साहाबा रज़ियल्लाहो अन्हो ने मुक़ाबला किया और अंततः सख़्त युद्ध हुआ। जबकि सहाबा कम थे परन्तु उनकी ईमानी ग़ैरत उनकी कमी की संख्या को पूरा कर रही थी। जिस जगह लड़ाई हुई अर्थात हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के घर के सामने वहां जगह भी तंग थी इसलिए भी उपद्रवी अपनी कसरत से ज़्यादा लाभ नहीं उठा सके। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को जब इस लड़ाई का इलम हुआ तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने सहाबा को लड़ने से मना किया परन्तु वे उस वक़्त हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को अकेला छोड़ देना ईमानदारी के विरुद्ध और इताअत के हुक्म के ख़िलाफ़ ख़्याल करते थे और अतिरिक्त हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के अल्लाह की क़सम देने के उन्होंने लौटने से इंकार कर दिया। आख़िर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने ढाल हाथ में पकड़ी और बाहर तशरीफ़ लाए और सहाबा को अपने मकान के अंदर ले गए और दरवाज़े बंद करा दिए और आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने सब साहाबा रज़ियल्लाहो अन्हो और उनके सहायता करने वालों को वसीयत की कि ख़ुदा तआला ने आप लोगों को दुनिया इसलिए नहीं दी कि तुम उसकी तरफ़ झुक जाओ बल्कि इसलिए दी है कि तुम उसके द्वारा से आख़िरत के सामान जमा करो। यह दुनिया तो फ़ना हो जाएगी और आख़िरत ही बाक़ी रहेगी। अतः चाहिए कि नष्ट होने वाली चीज़ तुम को ग़ाफ़िल न करे। बाक़ी रहने वाली चीज़ को फ़ानी हो जाने वाली चीज़ पर मुक़द्दम करो और ख़ुदा तआला की मुलाक़ात को याद रखो और जमाअत को तितिर बितर न होने दो और उस ख़ुदा के नाम को मत भूलों कि तुम हलाकत के गढ़े में गिरने वाले थे और ख़ुदा तआला ने अपने फ़ज़ल से तुमको नजात दे कर भाई-भाई बना दिया। इसके बाद आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने सब को विदा किया और कहा कि ख़ुदा तआला तुम्हारा हाफ़िज़-ओ-नासिर हो। तुम सब अब घर से बाहर जाओ और उन सहाबा को भी बुलाओ जिनको मुझ तक आने नहीं दिया था विशेषता हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु को। ये लोग बाहर आ गए और दूसरे सहाबा को भी बुलवाया गया। उस वक़्त कुछ ऐसी अवस्था पैदा हो रही थी और ऐसी उदासीनता छा रही थी कि बाग़ी भी इससे प्रभावित हुए बिना न रहे। वक़्ती तौर पर ऐसे हालात पैदा हो गए। जब आप ने कहा कि बाहर जाओ, ये लोग निकले तो बाग़ीयों ने हमला नहीं किया लेकिन बहरहाल ये बाहर गए और बड़े सहाबा को इकट्ठा किया और क्यों न होता सब देख रहे थे कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जलाई हुई एक शम्मा अब इस दुनिया की आयु को पूरी करके इस दुनिया के लोगों की नज़र से ओझल होने वाली है।

उद्देश्य बाग़ीयों ने ज़्यादा विवाद नहीं किया और सब सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु जमा हुए। उन्होंने भी कुछ नहीं कहा। सहाबा को जमा होने दिया। जब लोग जमा हो गए तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु घर की दीवार पर चढ़े और फ़रमाया मेरे क़रीब हो जाओ। जब सब क़रीब हो गए तो फ़रमाया कि लोगो! बैठ जाओ। इस पर सहाबा भी और मज्लिस के भय से प्रभावित हो कर बाग़ी भी बैठ गए। जब सब बैठ गए तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि मदीना वालो! मैं तुम को ख़ुदा तआला के सपुर्द करता हूँ और उससे दुआ करता हूँ कि वह मेरे बाद तुम्हारे लिए खिलाफ़त की कोई बेहतर व्यवस्था फ़र्मा दे। आज के बाद उस वक़्त तक कि ख़ुदा तआला मेरे सम्बन्ध में कोई फ़ैसला फ़र्मा दे, मैं बाहर नहीं निकलूँगा और मैं किसी को कोई ऐसा अधिकार नहीं दे जाऊँगा कि जिस के द्वारा से दीन या दुनिया में वह तुम पर हुकूमत करे और इस बात को ख़ुदा तआला पर छोड़ दूँगा कि वह जिसे चाहे अपने काम के लिए पसंद करे। इसके बाद सहाबा और अन्य मदीना वालों को क़सम दी कि वे आप रज़ियल्लाहु अन्हु की हिफ़ाज़त करके अपनी जानों को बड़े ख़तरा में न डालें और अपने घरों को चले जाएँ। आप रज़ियल्लाहु अन्हु के इस हुक्म ने सहाबा में एक बहुत बड़ा मतभेद पैदा कर दिया। ऐसा मतभेद कि जिस का उदहारण पहले नहीं मिलता। सहाबा मानने के अतिरिक्त और कुछ जानते ही नहीं थे परन्तु आज इस हुक्म के मानने में उनमें से कुछ की इताअत नहीं, ग़द्दारी की बू नज़र आती थी कि हमने माना तो यह इताअत नहीं है ग़द्दारी है। कुछ सहाबा ने इताअत के पहलू को मुक़द्दम समझ कर न चाहते हुए भविष्य के लिए दुश्मनों का मुक़ाबला करने का इरादा छोड़ दिया और शायद उन्होंने समझा कि हमारा काम केवल इताअत है। यह हमारा काम नहीं है कि हम देखें कि इस हुक्म पर अमल करने के क्या परिणाम होंगे। परन्तु कुछ सहाबा ने इस हुक्म को मानने से इंकार कर दिया क्योंकि उन्होंने देखा कि बेशक ख़लीफ़ा की इताअत फ़र्ज़ है परन्तु जब ख़लीफ़ा यह हुक्म दे कि तुम मुझे छोड़ कर चले जाओ तो इसके यह अर्थ हैं कि खिलाफ़त से वाबस्तगी छोड़ दो। अतः यह इताअत वास्तव में उपद्रव पैदा करती है। और वे यह भी देखते थे कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का उनको घरों को वापस करना उनकी जानों की हिफ़ाज़त के लिए था अर्थात सहाबा की जानों की हिफ़ाज़त के लिए था तो फिर क्या वे ऐसे मुहब्बत करने वाले वजूद को ख़तरे में छोड़ कर अपने घरों में जा सकते थे कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु तो उनकी मुहब्बत की ख़ातिर उनकी जानों को ज़ाए होने से बचा रहे हैं और वे हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को छोड़ दें यह मुम्किन नहीं था। इस वर्णित गिरोह में सब बड़े सहाबा शामिल थे। इस लिए इस हुक्म के अतिरिक्त हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु के लड़कों ने अपने अपने पिता के हुक्म के अधीन हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की ड्योढ़ी पर ही डेरा जमाए रखा और अपनी तलवारों को मियानों में नहीं दाख़िल किया।

उपद्रवियों की घबराहट और जोश की कोई हद बाक़ी नहीं रही जबकि हज से फ़ारिग़ हो कर आने वाले लोगों में से इक्के दुक्के मदीना में दाख़िल होने लगे और उनको मालूम हो गया कि अब हमारी क़िस्मत के फ़ैसला का वक़्त बहुत निकट है। इसलिए मुग़ीरा बिन अख्नस्ब पहले व्यक्ति थे जो हज के बाद जिहाद के सवाब के लिए मदीना में दाख़िल हुए और उनके साथ ही यह ख़बर बाग़ीयों को मिली कि बस्रा वालों का लश्कर जो मुस्लमानों की सहायता के लिए आ रहा है सिरार स्थान पर जो मदीना से केवल एक दिन के फ़ासले पर है आ पहुंचा है। इन ख़बरों से प्रभावित हो कर उन्होंने फ़ैसला किया कि जिस तरह हो अपने मुद्दा को जल्द पूरा किया जाए और क्योंकि वे सहाबा और उनके साथी, जिन्हों ने हज़रत

उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के मना करने के अतिरिक्त हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की हिफ़ाज़त न छोड़ी थी और साफ़ कह दिया था कि यदि हम आप को अतिरिक्त हाथों में मुक़ाबला की ताक़त होने के छोड़ दें तो ख़ुदा तआला को क्या मुँह दिखलाएँगे अपनी कम संख्या के कारण अब मकान के अंदर की तरफ़ से हिफ़ाज़त करते थे और दरवाज़ा तक पहुंचना बाग़ीयों के लिए मुश्किल नहीं था। उन्होंने दरवाज़े के सामने लकड़ियों के अंबार जमा करके आग लगा दें ताकि दरवाज़ा जल जाए और अंदर पहुंचने का रस्ता मिल जाए। साहाबा रज़ियल्लाहो अन्हो ने इस बात को देखा तो अंदर बैठना मुनासिब नहीं समझा। तलवारें पकड़ कर बाहर निकलना चाहा परन्तु हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस बात से रोका और फ़रमाया घर को आग लगाने के बाद और कौन सी बात रह गई है। अब जो होना था वह हो चुका। तुम लोग अपनी जानों को ख़तरे में न डालो और अपने घरों को चले जाओ। इन लोगों को केवल मेरी ज़ात से दुश्मनी है परन्तु जल्द ये लोग अपने किए पर पशेमान होंगे। मैं हर एक व्यक्ति को जिस पर मेरी इताअत फ़र्ज़ है उस फ़र्ज़ से आज़ाद करता हूँ और अपना हक़ माफ़ करता हूँ। परन्तु साहाबा रज़ियल्लाहो अन्हो ने और अन्य लोगों ने इस बात को स्वीकार नहीं किया और तलवारें पकड़ कर बाहर निकले। उनके बाहर निकलते वक़्त हज़रत अबू हुरेरह रज़ियल्लाहु अन्हु भी आ गए और इसके अतिरिक्त कि वह फ़ौजी आदमी नहीं थे वह भी उनके साथ मिल गए और फ़रमाया कि आज के दिन की लड़ाई से बेहतर और कौन सी लड़ाई हो सकती है और फिर बाग़ीयों की तरफ़ देख कर फ़रमाया। يٰقَوْمِ مَا لِيْ اَدْعُوْكُمْ اِلَى النَّجٰوةِ وَ تَدْعُوْنَنِيْٓ اِلَى النَّارِ (मोमिन : 42) अर्थात हे मेरी क़ौम क्या बात है कि मैं तुम को नजात की तरफ़ बुलाता हूँ और तुम लोग मुझे आग की तरफ़ बुलाते हो।

यह लड़ाई एक ख़ास लड़ाई थी और मुट्ठी भर साहाबा रज़ियल्लाहो अन्हो जो उस वक़्त जमा हो सके उन्होंने इस बड़े लश्कर का मुक़ाबला जान तोड़ कर किया। हज़रत इमाम हस्न रज़ियल्लाहु अन्हु जो निहायत सुलह करने वाले बल्कि सुलह के शहज़ादे थे उन्होंने भी इस दिन रजज़ (युद्ध-क्षेत्र में अपने कुल की शूरता और श्रेष्ठता का वर्णन) पढ़-पढ़ कर दुश्मन पर हमला किया। उनका और मुहम्मद बिन तल्हा का उस दिन का रजज़ खासतौर पर काबिल-ए-वर्णन है क्योंकि उनसे उनके दिल्ली ख़्यालात का ख़ूब अनुमान हो जाता है। हज़रत इमाम हस्न रज़ियल्लाहु अन्हु ये शेअर पढ़ कर बाग़ीयों पर हमला करते थे कि

حَتّٰى اَسِيْرَ اِلٰى طَمَارِ شَمَامِ لَا دِيْنُهُمْ دِيْنِيْ وَلَ اَنَا مِنْهُمْ

अर्थात उन लोगों का दीन मेरा दीन नहीं और न उन लोगों से मेरा कोई संबंध है और मैं उन लोगों से उस वक़्त तक लड़ूंगा कि शमाम पहाड़ की चोटी तक पहुंच जाऊं। (शमाम अरब का एक पहाड़ है जिसको बुलंदी पर पहुंचने और मक़सद के हुसूल से सामनता हैं) बहरहाल हज़रत इमाम हस्न रज़ियल्लाहु अन्हु का यह अर्थ है कि जब तक मैं अपने मुद्दा को न पहुंच जाऊं उस वक़्त तक मैं बराबर उनसे लड़ता रहूँगा और उनसे सुलह नहीं करूँगा क्योंकि हम में कोई मामूली इख़तिलाफ़ नहीं कि बिना उन पर फ़तह पाने के हम उनसे ताल्लुक़ क़ायम कर लें। यह तो वे ख़्यालात हैं जो इस सुलह के शहज़ादे के दिल में मोजज़िन थे। अब हम तल्हा के लड़के मुहम्मद का रजज़ लेते हैं। वह कहते हैं।

وَرَدَّ اَحْزَابًا عَلٰى رَغْمِ مَعَدٍّ اَنَا ابْنُ مَنْ حَامٰى عَلَيْهِ بِاُحُدٍ

अर्थात मैं उसका बेटा हूँ जिस ने रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिफ़ाज़त उहद के दिन की थी और जिसने इसके अतिरिक्त कि अरबों ने सारा ज़ोर लगाया था उनको पराजय दे दी थी। अर्थात आज भी उहद की तरह की एक घटना है और जिस तरह मेरे पिता ने अपने हाथ को तीरों से छलनी करवा लिया था परन्तु रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को आँच न आने दी थी मैं भी ऐसा ही करूँगा। हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु भी इस लड़ाई में शरीक हुए और बुरी तरह ज़ख़मी हुए। मरवान भी सख़्त ज़ख़मी हुआ और मौत तक पहुंच कर लौटे। मुग़ीरह बिन अख़नस मारे गए। जिस व्यक्ति ने उन को मारा था उसने देख कर कि आप ज़ख़मी ही नहीं हुए बल्कि मारे गए हैं ज़ोर से कहा इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। सरदार-ए-लश्कर ने उसे डाँटा कि इस ख़ुशी के अवसर पर अफ़सोस का इज़हार करते हो। उसने कहा कि आज रात मैंने स्वप्न में देखा था कि एक व्यक्ति कहता है कि मुग़ीरा के क़ातिल को दोज़ख़ की ख़बर दो। अत: यह मालूम करके कि मैं ही उस का क़ातिल हूँ मुझे इस का सदमा होना अनिवार्य था। ऊपर वर्णित लोगों के अतिरिक्त और लोग भी ज़ख़मी हुए और मारे गए और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की हिफ़ाज़त करने वाली जमाअत और भी कम हो गई लेकिन यदि बाग़ीयों ने ख़ुदा के डराने के अतिरिक्त भी अपनी ज़िद नहीं छोड़ी और ख़ुदा तआला की महबूब जमाअत का मुक़ाबला जारी रखा तो दूसरी तरफ़ मुख़लिस मित्रों ने भी अपने ईमान के उच्च उदाहरण दिखाने में कोई कमी नहीं की। इसके अतिरिक्त कि अधिकतर मुहाफ़िज़ मारे गए या ज़ख़मी हो गए फिर भी एक क़लील गिरोह बराबर दरवाज़े की हिफ़ाज़त करता रहा। (उद्धरित इस्लाम में इख़तिलाफ़ात का आग़ाज़, अनवारुल उलूम भाग 4 पृष्ठ 314 से 327)

बहरहाल इसकी निरंतरता अभी आगे भी चलेगा। भविष्य में जुमे पर प्रस्तुत करूँगा। इन शा अल्लाह।

पाकिस्तान के अहमदियों के लिए पुन: दुआ का निवेदन है, अल-जज़ायर के लिए भी, वहां भी पुन: केस खुल रहे हैं। अल्लाह तआला इन सब के लिए आसानीयां पैदा करे और मुख़ालिफ़ीन की सख़्तियों को अल्लाह तआला जल्द दूर फ़रमाए। आसानीयां पैदा फ़रमाए।

अब नमाज़ों के बाद मैं कुछ जनाज़े भी अदा करूँगा। उनका वर्णन भी यहां कर देता हूँ। जनाज़ा ग़ायब होंगे। पहला वर्णन आदरणीय मौलवी मुहम्मद नजीब ख़ान साहब नायब नाज़िर तब्लीग़ दक्षिण भारत क़ादियान का है जो मास्टर वी. ऐम. मुहम्मद साहिब मरहूम आफ़ जमाअत अहमदिया कन्नाड ज़िला अर्नाकुलम केराला के थे। 14 फरवरी को हार्ट-अटैक के कारण उनकी वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।

अल्लाह के फ़ज़ल से मूसी थे। उनके पीछे रहने वालों में पत्नी के अतिरिक्त तीन बेटे शामिल हैं और तीनों बेटे वक़्फ़ नौ की बाबरकत तहरीक में शामिल हैं। एक बेटा जामिया अहमदिया में पढ़ रहा है। मरहूम पैदाइशी अहमदी नहीं थे बल्कि सतरह वर्ष की आयु में मरहूम को अपने पिता के द्वारा जमाअत अहमदिया का परिचय हुआ था जिस पर आप जमाअती लिटरेचर और किताब "इस्लामी उसूल की फ़िलासफ़ी" का अध्ययन करने लगे और एक दिन अपने पिता साहिब से पूछा कि एक बच्चा कितनी आयु में स्वयं फ़ैसले ले सकता है जिस पर मरहूम के पिता साहिब ने कहा कि इन्सान सतरह, अठारह वर्ष की आयु में अपने फ़ैसले ले सकता है। इस पर मरहूम ने मौलाना मुहम्मद अलवी साहिब के द्वारा बैअत करके जमाअत में शामिल हुए। बैअत के हवाले से मौलाना अलवी साहिब अपना एक स्वप्न वर्णन करते हैं कि उन्होंने स्वप्न में देखा था कि उनकी तरफ़ कई सितारे आ रहे हैं जिनमें से एक छोटा सितारा बड़ी तेज़ी से आ रहा है तो अलवी साहिब इस छोटे सितारे से मुराद मौलवी मुहम्मद नजीब ख़ान साहब मरहूम को लिया करते थे। बहरहाल आप अपने घर में सबसे पहले बैअत करने वाले थे। उनके पिता जब कि जमाअत को जानते थे लेकिन अहमदी नहीं हुए थे। बाद में मरहूम की कोशिशों से ही पिता, भाईयों और पिता ने बैअत की। बैअत के बाद मरहूम ने एक स्वप्न के आधार पर जामिआ अहमदिया में दाख़िला लिया और बतौर वाक़िफ़ ज़िंदगी, सिलसिला की ख़िदमत का फ़ैसला कर लिया। फिर वहां से फ़राग़त के बाद हिन्दुस्तान में उनकी नियुक्ति हुई। उन्होंने पहले चंडीगढ़ में, फिर विभिन्न स्थानों पर मुबल्लिग़ के तौर पर काम किया। फिर उनको मैं ने नायब नाज़िर तब्लीग़ निर्धारित किया। इसी तरह नायब इंचार्ज विभाग नुरूल-इस्लाम में उन्होंने काम किया जो वहां तब्लीग़ का काम बड़ी अच्छी तरह कर रहा है।

आप नमाज़ और कुरआन के पाबंद थे। तहज्जुद गुज़ार, खिलाफ़त से सच्ची वाबस्तगी रखने वाले, वफ़ादारी और सच्ची मुहब्बत और अक़ीदत रखते थे। हर काम ख़ुलूस के साथ निहायत संजीदगी और सलीक़े से समय पर किया करते थे। उनकी फ़ित्रत में शामिल था कि काम को बड़ी संजीदगी से करें और समय पर करें। इबादत की तरफ़ विशेष ध्यान था। घर वालों को भी इस तरफ़ तवज्जा दिलाते थे। हुक़ूक़ उल-ईबाद की अदायगी में भी ख़ास हिस्सा लेते थे।

शीराज़ साहिब विभाग नुरुल इस्लाम के इंचार्ज लिखते हैं कि बाक़ायदगी के साथ यह बैयतुद्-दुआ में आ कर दुआ करते थे। बहुत शरीफ़ उल-नफ़स थे। दीन की बेलौस ख़िदमत का जज़बा रखते थे। ख़लीफ़-ए-वक़्त की तर्बीयती और तब्लीग़ी टार्गेट्स को पूरा करने में व्यस्त रहते थे। जमाअती पुस्तकों का मलयालम भाषा में अनुवाद और अनुवादित पुस्तकों के रिव्यू और चैकिंग की भी उनको तौफ़ीक़ मिली। नाज़िर नश्र-व-इशाअत क़ादियान ने मरहूम की इन ख़िदमात के हवाले से लिखा है कि मरहूम को पुस्तक अल्वसीयत, तजल्लियाते इलाही, इर्फ़ान-ए-इलाही, क़ायदा यस्सर्नल-क़ुरआन और मेरे ख़ुतबात, खिताबात तहरीक वक़्फ़-ए-नौ का मलयालम भाषा में अनुवाद करने की तौफ़ीक़ मिली। इसी तरह तफ़सीर सग़ीर के मलयालम अनुवाद की री प्रिंटिंग के वक़्त उसकी चैकिंग की भी उनको

तौफ़ीक़ मिली। उनकी एक किताब निसाब तालीम तीन भागो में मलयालम भाषा में है। 2013 ई. से 16 ई. तक उनको सदर रिव्यू कमेटी प्रान्त केराला ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। अमीर ज़िला एर्नाकुलम प्रान्त केराला अबू बकर साहिब कहते हैं कि उनके अंदर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तहरीरात का अनुवाद कर के लोगों तक पहुंचाने का एक जोश था। कमज़ोर ईमान वालों को इस्तिक़ामत के मयार तक पहुंचाने और उनकी साबित क़दमी के लिए भी हमेशा कोशिश करते रहते थे। अल्लाह तआला मरहूम के दर्जात बुलंद फ़रमाए।

दूसरा जनाज़ा है, वर्णन है नज़ीर अहमद ख़ादिम साहिब का जो चौधरी अहमद दीन साहिब चठ्ठा के बेटे थे और मुनीर बिस्मिल साहिब ऐडीशनल नाज़िर इशाअत के बड़े भाई थे। 6 फरवरी को यह वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उनके दादा चौधरी शाह दीन साहिब के द्वारा से उनके ख़ानदान में अहमदियत आई थी। नज़ीर ख़ादिम साहिब ने कॉलेज के ज़माना से ही ख़िदमत-ए-दीन का आग़ाज़ कर दिया था। अल्लाह तआला ने उनको तहरीर-और-तक़रीर में ख़ास प्रतिभा प्रदान की थी। जवानी से लेकर ज़िंदगी के आख़िरी वक़्त तक तकरीरो तहरीर और वाज़-ओ-नसीहत के द्वारा ख़िदमत-ए-दीन और तब्लीग़-ए-दीन में लगे रहे। खुद्दामुल अहमदिया रब्वा में मुआविन सदर रहे। फिर मोतमिद के तौर पर ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। फिर नायब अमीर ज़िला बहावल नगर भी रहे। नायब क़ायद उमूमी मज्लिस अन्सारुल्लाह के तौर पर ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। दारुल क़ज़ा रब्वा के क़ाज़ी भी रहे। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत का व्यवहार फ़रमाए और उनके परिजनों को उनकी नेकियों को जारी रखने की, उनके बच्चों को उनकी नेकियों को जारी रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

अगला वर्णन आदरणीय अल्हाज डाक्टर नाना मुस्तफ़ा ऊटी बवाटिंग साहिब का है जो हाजी चो-चो के नाम से घाना में थे। 17 जनवरी को सत्तर वर्ष की आयु में उनकी वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।

ईसाई घराने में यह पैदा हुए थे। 1979 ई. में उनको अहमदियत क़बूल करने की तौफ़ीक़ मिली और आपने अपनी अमली ज़िंदगी एक ड्राईवर के तौर पर शुरू की। आप को अमीर अब्दुल वहाब आदम साहिब के साथ लंबा समय बतौर ड्राईवर ख़िदमत का अवसर मिला। बर्तानिया और फिर घाना में जमाअत की प्रैस में ख़िदमत करने का भी अवसर मिला। कुछ समय जापान में भी रहे जहां आपको अपनी जमाअत का लोकल प्रैज़ीडैंट भी बना दिया गया। मैं भी जब वहां था तो उस वक़्त मैंने देखा है यह बड़े हँस मुख और हर वक़त दीनी काम में व्यस्त रहने वाले व्यक्ति थे। इसके अतिरिक्त कि कोई पोज़ीशन नहीं थी लेकिन कोशिश होती थी कि हर वक़त हर काम के लिए हाज़िर रहें। उन्होंने बाद में फिर अपना बिजनेस शुरू कर दिया और फिर तरक़्क़ी करते करते घाना के प्रसिद्ध बिज़नस मैनों में उनका शुमार होने लगा। और चो-चो इंडस्ट्री के नाम से उनकी एक फ़ैक्ट्री भी थी। इस बिज़नस की कामयाबी को ख़ुदा तआला के फ़ज़ल के साथ ख़लीफ़ा वक़्त की दुआओं और क़ुर्बानी के जज़बा की तरफ़ मंसूब किया करते थे। माली क़ुर्बानियां भी बहुत कीं। बतौर नैशनल सैक्रेटरी जायदाद घाना ग्यारह वर्ष तक उनको ख़िदमत का अवसर मिला। रीजनल प्रैज़ीडैंट के तौर पर ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। मरहूम अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मूसी थे। आप के पीछे रहने वालों में तीन पत्नियां और तीन बेटियां शामिल हैं। आप का एक बेटा भी था जो कुछ वर्ष क़बल वफ़ात पा गया था।

मुबारक अहमद आदिल साहिब मिशनरी रैडवा (koforidua) के हैं वह लिखते हैं कि आप की ख़ूबीयों में दीन और इन्सानियत की ख़िदमत के लिए वक़्त और माल की अंधाधुंध क़ुर्बानी और विनम्रता बहुत विशेष थी। नमाज़ तहज्जुद और पाचों समय की नमाज़ों की अदायगी का विशेष ख़्याल रखते थे। चन्दों की नियमितता और समय पर अदायगी करते। आपने एक मस्जिद पूर्णता अपने ख़र्च से बनवाई और कई मस्जिदों की तामीर में आधे से अधिक ख़र्च अदा किया। इसी तरह कुछ मिशन हाऊसज़ की तामीर और मुरम्मत में भी बड़ा हिस्सा लिया। जमाअती ज़मीनों पर जब कोई क़बज़ा या अन्य मसला इत्यादि पैदा होता तो क़ानूनी चारा-जोई करने के लिए स्वयं वकील करके उसकी पैरवी करते। समस्त अख़राजात अपनी जेब से अदा करते, जमाअत से नहीं लेते थे। अहमदियत के पैग़ाम की तब्लीग़ के लिए आप के दिल में एक ख़ास भावना और शौक़ था। मात पिता को भी आपने तब्लीग़ करके अहमदियत में दाख़िल किया। दस वर्ष से अधिक समय तक एक रेडीयो स्टेशन जो घाना की आधी जनसंख्या तक सुना जाता है इस में अपने ख़र्च पर आधे घंटे का तब्लीग़ी प्रोग्राम करवाते रहे जो अब भी जारी है। फिर उनका एक टीवी चैनल भी था इस में भी अपने ख़र्च पर तब्लीग़ का रोज़ाना एक और एक हफ़्ता-वार प्रोग्राम करवाते रहे और वीडीयो प्रोग्राम भी होता था। तब्लीग़ के हवाले से प्रसारण होते थे। इन प्रोग्रामों के द्वारा से लाखों लोगों तक जमाअत का पैग़ाम पहुंचा और सैंकड़ों को अहमदियत स्वीकार करने की तौफ़ीक़ भी मिली। एक गाड़ी केवल तब्लीग़ी कामों के लिए वक़्फ़ कर रखी थी। तब्लीग़ी और तरबियती ज़िम्मेदारियों की अदायगी में सहूलत और तेज़ी पैदा करने के उद्देश्य से आपने कुछ मोअल्लमीन और मुरब्बियान को मोटर साईकलें और कुछ को कारें भी लेकर दी थीं। पोशीदा तौर पर उनकी माली सहायता किया करते थे और लोगों को जमाअत को नसीहतन कहा करते थे कि अहमदियत को अपनी ज़ाती और क़ीमती प्रॉपर्टी की तरह महबूब और अज़ीज़ जान कर इख़लास के साथ उसकी ख़िदमत और हिफ़ाज़त करनी चाहिए। तब्लीग़ के लिए हर प्रकार की क़ुर्बानी किया करें। इस से अल्लाह तआला भी आप पर अपने बेशुमार फ़ज़ल और एहसान करेगा और यह स्वयं उसका नमूना थे। दूसरों को जो उपदेश करते अपना अमली नमूना भी उसके अनुसार रखने की कोशिश करते। को फ़ो रैडों रीजन का हस्पताल जो रीजन का सबसे बड़ा हस्पताल है इसकी कुछ सड़कें टूट-फूट गई थीं, अंदर मरीज़ों के लिए बहुत कठिनाई आती थीं तो अपने ख़र्च पर नए सिरे से उन्होंने वह सड़क बनवाई और उद्घाटन के लिए रीजनल मिनिस्टर और राजनीतिक व्यक्ति, डाक्टरज़, मीडीया इत्यादि सब वहां आए हुए थे वे सब तक़रीबन ग़ैर अहमदी थे या ईसाई थे। आप ने इस अवसर पर अपना इज़हार-ए-ख़याल करते हुए कहा कि मैं एक अहमदी मुस्लमान हूँ और मसीह की दूसरी आमद मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी पर ईमान रखता हूँ। मसीह मौऊद और आप के खलीफ़ा ने ही मुझे हुक़ूक़ अल्लाह की अदायगी के लिए इन्सानियत की ख़िदमत करना भी सिखाया है जिस की वजह से बतौर अहमदी मुस्लमान मैं इन्सानों से हमदर्दी और उनके कष्ट दूर करने की कोशिश करना अपना फ़र्ज़ समझता हूँ और यही वजह है कि मैंने हस्पताल में यह सड़क बनाई है। 48 वर्ष की आयु में आपने क़ुरआन-ए-करीम पुन: मोअल्लिम जमालुद्दीन साहिब के द्वारा से पढ़ा और यस्सर्नल क़ुरआन भी पुन: सीखा ताकि उच्चारण सही हो। फिर बाक़ायदा अनुवाद के साथ तिलावत की आदत रखी और बहुत ग़ौर किया करते थे।

बहुत से बच्चों को आपने अडॉप्ट (Adopt) किया था। उनकी रिहायश के लिए अपने घर में कमरे मुहय्या किए हुए थे। उनकी दीनी-ओ-दुनियावी तालीम की भी व्यवस्था की हुई थी। उद्देश्य कि बेशुमार नेकियां करने वाले यह व्यक्ति थे। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का व्यवहार फ़रमाए। दर्जात बुलंद करे और उनके परिजनों को भी उनकी नेकियों को जारी करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

अगला जो वर्णन है वह आदरणीय ग़ुलाम नबी साहिब पुत्र फ़ज़लदीन साहिब रब्वा का है। यह ज़िउर्रहमान साहिब तय्यब मुरब्बी सिलसिला गाबोन (Gabon) के पिता थे जो 2 फरवरी को वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। पैदाइशी अहमदी थे। बैंक की मुलाज़मत किया करते थे। वहां से रिटायर्ड हुए तो फिर डस्का में आ कर आबाद हुए। वहां के सैक्रेटरी माल रहे। नायब सदर भी रहे। जनरल सैक्रेटरी भी रहे। ज़ईम अन्सारुल्लाह भी रहे। नमाज़ के इमाम के तौर पर ख़िदमात अंजाम दी। तहज्जुद के पाबंद, नमाज़ें कोशिश करके मस्जिद में अदा करते थे। बाक़ायदा ऊँची आवाज़ में क़ुरआन-ए-करीम की तिलावत करने वाले इंतिहाई शफ़ीक़, हमदरद, नर्म-दिल और साबिर-और -शाकिर इन्सान थे। ज़ायाउर्रहमान साहब तय्यब जो गाबोन के मुरब्बी सिलसिला हैं जैसा कि मैंने कहा उनके पिता थे और हालात की वजह से अपने पिता के जनाज़े और तदफ़ीन में यह मुरब्बी साहिब शामिल नहीं हो सके। अल्लाह तआला उनको भी सब्र और हौसला अता फ़रमाए और मरहूम के दर्जात बुलंद फ़रमाए।

☆ ☆ ☆ ☆


## इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

**"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"**

**(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)**

**तालिबे दुआ**

**KHALEEL AHMAD**

**S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY,**

**JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)**

पृष्ठ 2 का शेष

व रहमतुल्लाहे व बरकाताहु। अल्लाह तआला आप को हमेशा अमन और सलामती में रखे। इसके बाद समस्त मेहमानों का शुक्रिया अदा करता हूँ जो समय निकाल कर हमारे इस फंक्शन में पधारे। और इस समय जो संख्या यहां के मेहमानों की मुझे नज़र आ रही है जिन में से अधिकतर अहमदी नहीं हैं, यह इस बात का सबूत है कि यहां के रहने वाले लोग खुले दिल के लोग हैं और जानना चाहते हैं कि उनके पड़ोस में आ कर कौन लोग बसे हैं। और यही सबूत है उनके खुले दिल होने का कि वे यहां पधारे और इस मस्जिद के उद्घाटन के अवसर को सम्मन बखशा।

मस्जिदों का उद्घाटन एक धार्मिक फंक्शन है और इस धार्मिक फंक्शन में ऐसे लोगों का आना जिन का इस धर्म से कोई सम्बन्ध नहीं मेरे नज़दीक एक बहुत बड़ी बात है और यह इस बात का सबूत है कि आप लोग चाहते हैं कि इस शहर के लोग आपस में प्यार और मुहब्बत से मिल-जुल कर रहें। अत: इस बात पर मैं आप लोगों का शुक्रिया अदा करता हूँ। और समस्त वक्ताओं का भी जिन्हों ने अपने विचारों का प्रकटन किया और बड़ा खुल कर प्रकटन किया। और यह शुक्रिया अदा करना मेरा कर्तव्य है। एक दीनी कर्तव्य भी है और अख़लाक़ी कर्तव्य भी है क्योंकि इस्लाम के संस्थापक हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि यदि तुम इन्सानों का शुक्रिया अदा नहीं करते तो तुम ख़ुदा तआला का भी शुक्रिया अदा करने वाले नहीं हो सकते। अत: जो लोग मस्जिद इस लिए बना रहे हैं कि ख़ुदा तआला की इबादत की जाए और इस इबादत के साथ उस के शुक्रगुज़ार बन्दे बना जाए, वे यह किस तरह बर्दाश्त कर सकते हैं कि अल्लाह तआला के हुक्म पर अमल न करते हुए अल्लाह के रसूल के हुक्म पर अमल न करते हुए उन लोगों का शुक्रिया अदा न करें जो उनके साथ हुस्न-ए-सुलूक करने वाले हैं। मिल-जुल कर रहने वाले हैं। अत: यह मेरा शुक्रिया अदा करना एक मेरा दीनी कर्तव्य भी बन जाता है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

हमारे यहां के नैशनल अमीर साहिब ने अपने विचारों के प्रकटन में या शहर के परिचय में कहा कि शहर में बहुत सारे इलमी और अदबी लोग भी पैदा हुए, विभिन्न किस्म के दूसरे लोग भी आए। शहरों की एक वास्तविक्ता तो यही होती है कि शहरों में बसने वाले विभिन्न वर्ग के लोग होते हैं, विभिन्न किस्म के लोग होते हैं। न किसी शहर को इस लिए बुरा कहा जा सकता है कि वहां के कुछ लोग संप्रदायवादी हैं और न किसी शहर की ख़ूबी केवल इतनी है कि वहां पर कुछ अच्छे लोग रहते हैं। बल्कि शहर तो समूह है लोगों का। और जब अधिकतर लोग अच्छे हों, जो प्यार और मुहब्बत से रहने वाले हों तो शहर की यही सबसे बड़ी ख़ूबी है। अत: इस लिहाज़ से भी यह शहर बड़ा ख़ुश-क़िस्मत है कि यहां के अधिकतर लोग बहुत उच्च आचरण रखने वाले लोगों हैं।

इस मस्जिद की जगह के बारे में बताया गया है कि यहां एक सुपर मार्केट होती थी और एक सुपर मार्केट में लोग अपनी ग्रॉसरी ख़रीदने के लिए, शॉपिंग करने के लिए और विभिन्न ज़रूरीयात को पूरा करने के लिए जाते हैं और रक़म ख़र्च करते हैं। लेकिन यहां इस सुपर मार्केट को अब जो मस्जिद में तबदील किया गया है तो इस में दुनियावी और भौतिक चीज़ें तो नहीं मिलेंगी। लेकिन यह जो एक ख़ुदा का घर बनाया गया है, उस ख़ुदा का घर, जिसने कहा कि मेरी इबादत भी करो और उच्च आचरण का प्रकटन भी करो, अपने पड़ोसियों के हुक़ूक़ भी अदा करो और अमन और मुहब्बत की फ़िज़ा भी क़ायम करो। अत: अब इस जगह, शहर के लोगों के लिए यहां रहने वालों के लिए यह रुहानी माल उपलब्ध है या वे चीज़ें मिल सकेगीं जो बिना किसी क़ीमत की अदायगी के प्राप्त हो सकती हैं और इन शा अल्लाह यहां आने वाले, यहां रहने वाले अहमदी इस मस्जिद को आबाद करने वाले अहमदी उच्च आचरण का प्रकटन करने वाले होंगे। और प्रत्येक अहमदी को यह याद रखना चाहिए कि मस्जिद बनने के बाद उसकी ज़िम्मेदारी बढ़ जाती है कि उसने मस्जिद के हक़ को यदि अदा करना है तो इस मस्जिद में आ कर एक ख़ुदा की केवल इबादत करना काफ़ी नहीं है। बल्कि उच्च आचरण का प्रकटन भी है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

अपने पड़ोसियों के हक़ अदा करना भी ज़रूरी है। मुहब्बत और प्यार की फ़िज़ा को पहले से ज़्यादा बेहतर करने की आवश्यकता है और यहां आने वाले प्रत्येक व्यक्ति को यह एहसास दिलाने की आवश्यकता है कि यह घर जो हमने ख़ुदा के नाम पर बनाया है सिर्फ इबादत करने वाला घर नहीं है। बल्कि यहां से मुहब्बत और प्यार की बातें आप तक पहुंचेंगी।

मुहब्बत और प्यार के तोहफ़े आप को दिए जाऐंगे। और यही वह असल वास्तविक्ता है जो मस्जिद की होनी चाहिए और है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

हम अहमदी मुस्लमानों, अहमदी मुस्लमान इस लिए कहता हूँ कि इस समय मुस्लमानों में बहुत सारे ऐसे समूह हैं जिन पर सांप्रदायिकता का आरोप लगाया जाता है या कुछ ऐसे हैं जिनसे कुछ हरकात हो सकती हैं। लेकिन जमाअत अहमदिया वह जमाअत है जो इस ज़माना में उस मसीह मौऊद और महदी मौऊद को मानने वाली है जिस ने आ कर हमें यह बताया कि इस्लाम मुहब्बत, प्यार और भाई चारे की शिक्षा देता है। हमें बताया कि तुम उस ख़ुदा को मानने वाले हों, उस ख़ुदा की इबादत करने वाले हों जिस ने क़ुरआन-ए-करीम की पहली सूरत में ही हमें यह हुक्म दे दिया कि मैं समस्त संसार का पालनहार हूँ। मैं केवल मुस्लमानों का पालनहार नहीं। मुस्लमानों का ख़ुदा नहीं। मैं ईसाइयों का भी ख़ुदा हूँ। मैं यहूदीयों का भी रब हूँ। मैं दूसरे धर्मों के मानने वालों का भी रब हूँ। यहाँ तक कि मैं प्रत्येक इन्सान का रब हूँ। यहाँ तक कि समस्त सृष्टि का रब हूँ। अत: अल्लाह तआला की यह रबूबियत हमें बताती है कि ख़ुदा तआला सबको पालने वाला है, सबका पालन पोषण करने वाला है। सब के जीवन को सामान पैदा करने वाला है और सबको जीवन देने वाला है।

अत: जब हम उस ख़ुदा की इबादत करते हैं जो सबका पालन पोषण करने वाला है तो फिर एक हक़ीक़ी अहमदी मुस्लमान की ख़ुसूसीयत तब ही हो सकती है जब वह अपने पड़ोसियों को भी अल्लाह तआला की इस विशेषता पर अमल करते हुए, लोगों को यह एहसास दिलाए कि मेरे से तुम्हें नुक़्सान नहीं पहुँचेगा। बल्कि यदि तुम्हें मेरी सहायता की आवश्यकता हो तो मैं प्रत्येक सहायता के लिए तैयार हूँ। मैं तुम्हारे लिए प्रत्येक किस्म की सेवा करने के लिए तैयार हूँ तुम्हारा पालन पोषण करना जो मेरे ख़ुदा का काम है, यदि मेरे में ताक़त है तो उसके लिए भी और प्रत्येक अनाथ के लिए, प्रत्येक बीमार के लिए, प्रत्येक ज़रूरतमंद के लिए मैं आगे आने वाला हूँ।

अत: जब हम अल्लाह तआला के लिए यह कहते हैं कि वह रब्बु अलालमीन है और जब अल्लाह तआला यह फ़रमाता है कि मुझे मानने वाले मेरी विशेषताओं को भी इख़तियार करें तो यह विशेषता भी हमें इख़्तियार करनी चाहिए और तब ही हम हक़ीक़ी मुस्लमान भी बनते हैं। अल्लाह तआला के नबी, इस्लाम के संस्थापक आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें यह फ़रमाया कि बंदों की सेवा में आगे बढ़ो। आपने जब नबुव्वत का दावा किया इससे पहले मक्का में एक संस्था क़ायम की इन्सानियत की सेवा के लिए, ख़िदमत-ए-ख़लक़ के लिए, कुछ अच्छे हैसियत रखेने वाले लोग जमा हुए और उन्होंने कहा हम सेवा करेंगे। लोगों की ज़रूरतों को पूरा करेंगे। लोगों की तकलीफों को दूर करेंगे। और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस में शामिल हुए और जब अल्लाह तआला ने आप को नबुव्वत का स्थान प्रदान फ़रमाया और उस समय आप पहले से बढ़ कर इन्सानियत की सेवा करने वाले बन गए तब भी आपने एक अवसर पर फ़रमाया कि जबकि कि मैं नबी हूँ जबकि कि मेरे मानने वाले इन्सानियत की सेवा कर रहे हैं। लेकिन वह संस्था जो इस्लाम से पहले क़ायम हुई थी और जिस में अब भी ग़ैर मुस्लिम लोग शामिल हैं, चाहे वे ग़ैर मुस्लिम हो यदि मुझे बुलाऐं कि इस संस्था में शामिल हो जाओ और इन्सानियत की सेवा करो तो मैं ख़ुशी से जाऊँगा और उस में शामिल हो कर इन्सानियत की सेवा करूँगा। तो यह स्थान है एक मुस्लमान का, एक हक़ीक़ी मुस्लमान का, एक अहमदी मुस्लमान का कि किस तरह वे मानवता की सेवा को प्राथमिकता देते हैं। बल्कि अल्लाह तआला ने कुछ जगह यह भी फ़रमाया कि तुम्हारी इबादतें कई दफ़ा इन्सानियत की सेवा के कामों के मुक़ाबले में कोई हैसियत नहीं रखतीं या कई बार तुम्हारी इबादतों के समक्ष इन्सानियत की सेवा के काम प्रथम हैं। या कई बार यदि तुम्हें इन्सानियत की सेवा के लिए बुलाया जाए या किसी इन्सान की तकलीफ़ दूर करने के लिए बुलाया जाए तो तुम इबादत को छोड़ो और पहले अपने भाई की तकलीफ़ दूर करो। अत: यह है वह शिक्षा उस हक़ीक़ी मुस्लमान की, जो

मस्जिद में इबादत के लिए आता है और यह शिक्षा उस को अमल करने के लिए दी है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

मेयर साहिब ने यहां तक़रीर की। उनका मैं शुक्रिया भी अदा करता हूँ कि उन्होंने और यहां की कौंसल ने यहां के सियासतदानों ने इस मस्जिद के क़ियाम के लिए भरपूर प्रयास किए और फिर केवल इंतिज़ामीया की सहायता से मस्जिद नहीं बन सकती थी। जब तक हमारे पड़ोसी और यहां के स्थानीय लोग भी इस में शामिल न होंते अत: मैं आप सब का इस कारण भी शुक्रिया अदा करता हूँ के आप लोगों ने हमारी मस्जिद के बनाने में, इसके क़ायम करने में सहायता की और एक घर अहमदी मुस्लमानों को इस लिए प्रदान कर दिया कि वे अपने ख़ुदा की इबादत कर सकें और यहां इकट्ठे हो कर जमा हो कर इन्सानियत की सेवा के मंसूबे बना सकें। यहां के शहरीयों की सेवा के लिए अपनी प्लैनिंग कर सकें और उन शहरीयों को जगह प्रदान कर सकें कि वे यहां आएं और अपने आयोजन करें।

हमारी मस्जिदें तो प्रत्येक के लिए खुली होती हैं। और इसी लिए कुछ स्थानों पर मल्टी परपज़ हाल भी बनाए जाते हैं। इसी लिए कि जो भी फंक्शन हों, बे-शक ग़ैर मुस्लिमों के भी हों वहां आ कर आराम से कर सकते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

मेयर साहिब ने एक बड़ी अच्छी बात की कि संसार इकठ्ठा हो रहा है। यह बात मैं अधिकतर जगह वर्णन करता हूँ। वह ज़माना ख़त्म हो गया जब संसार में फ़ासले होते थे। अब फ़ासले सिमट गए हैं। यात्रा के फ़ासले भी सिमट गए हैं और राबतों के फ़ासले भी सिमट गए हैं। यदि यात्रा महीनों की घंटों में तै होने लगी है तो राबतों के फ़ासले, महीनों के सैकिण्डज़ के अंदर अंदर तै होने लगे हैं। बल्कि सैकिण्ड से भी कम हिस्से में तै होने लगे हैं और एक जगह से दूसरी जगह ख़बर पहुंच जाती है। अत: जब ऐसी स्थिति हो तो संसार एक दूसरे को जान लेता है। एक दूसरे के हालात से परिचय प्राप्त कर लेता है। अब हम अल्लाह तआला के फ़ज़ल से संसार के दो स्वच्छ देशों में हैं। यहां इस शहर में जो कुछ हो रहा है वह कुछ सैकिण्ड में मसलन इस जमाअत अहमदिया के माध्यम से ही, कुछ सैकिण्ड में या इस से थोड़ी देर के बाद यही फंक्शन सारे संसार के अहमदी जान लेंगे। बल्कि न केवल अहमदी लोग बल्कि अहमदी लोगों से सम्बन्ध रखने वाले लोग भी जान लेंगे। बल्कि कुछ जगह ऐसी स्थिति भी है कि वहां के स्थानीय टी.वी. चैनल और रेडीयो ख़बरें देते हैं। उनको भी पता लग जाएगा वे भी शायद यह ख़बर दे दें। तो इतने फ़ासले सिमट गए हैं कि एक शहर जिस की आबादी 90 हज़ार कही जाती है, इस शहर में होने वाले इस प्रोग्राम की ख़बर संसार के प्रत्येक मुल्क में फैल जाएगी। तो इस से ज़्यादा और क्या दलील फ़ासले सिमटने की हो सकती है।

इस छोटे से शहर में इसके अतिरिक्त कि इस की आबादी 90 हज़ार है मुझे यह सुन कर हैरत हुई कि यहां एक सौ सत्ताईस कौमें रहती हैं और मुहब्बत और प्यार से रहती हैं। इतनी विभिन्न किस्म की नसलों और क़ौमों का यहां रहना यही बताता है कि इस शहर के लोगों में खुले दिल होने की न केवल सलाहीयत है बल्कि इस का प्रकटन उनके अमल से भी होता है। अत: इस शहर के रहने वालों की यह एक बहुत बड़ी ख़ूबी है और मेरी दुआ है कि यह ख़ूबी हमेशा उन लोगों में क़ायम रहे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

जैसा कि मैंने कहा कि हमारे पैदा करने वाले ने हमें बताया कि तुम मेरी विशेषताओं को इख़्तियार करो। उसने हमें कहा कि एक दूसरे से मुहब्बत और प्यार रखों उसने मुहब्बत और प्यार हमारी फ़ित्रत में पैदा किया है। लेकिन कई दफ़ा कुछ स्वार्थी लोग फ़साद पैदा करने के प्रयास करते हैं। दिलों में फूट डालने के प्रयास करते हैं। अत: ऐसे लोगों से बचना प्रत्येक अक़लमंद इन्सान का काम है। और जहां तक जमाअत अहमदिया का सम्बन्ध है यदि हमारे में कोई फ़ित्ना डालने का प्रयास करे भी यह कहने का प्रयास करे भी कि अमुक आप के विरुद्ध बोल रहा है या अमुक नहीं बोल रहा तो यदि आवश्यकता हो तो क़ानून के दायरा में रहते हुए हम ज़रूर इसका उत्तर देते हैं। लेकिन बिना कारण के, द्वेष पैदा करके और फ़साद पैदा करके के माहौल को बिगाड़ने का प्रयास नहीं करते। और मेरा विचार है कि यह आचरण आपने यहां जमाअत में यक़ीनन देखा होगा। और इस मस्जिद के बनने के बाद इस आचरण का प्रकटन मज़ीद खुल कर इन शा अल्लाह तआला जमाअत अहमदिया की ओर से होगा।

अत: मैं यहां के मेहमानों से, यहां के शहरीयों से यह भी निवेदन करूँगा कि इस मुहब्बत और प्यार और भाई चारे और आपस में मिल-जुल के रहने की ख़ूबी को हम ने हमेशा क़ायम रखना है। और यदि कोई फ़साद पैदा करने का प्रयास करता है तो हम ने मिल कर उस को ख़त्म करना है और इन शा अल्लाह तआला जमाअत अहमदिया इस बारे में प्रत्येक क़दम में आपके साथ होगी बल्कि सबसे आगे होगी। आज संसार को सांप्रदायिकता के बदले में मुहब्बत की आवश्यकता है। प्यार की आवश्यकता है। भाई चारे की आवश्यकता है। आपस के सम्बन्ध की आवश्यकता है। अत: यदि हमने संसार में मुहब्बत और प्यार पैदा करना है तो प्रत्येक सतह पर, प्रत्येक शहर की सतह पर, प्रत्येक क्षेत्र की सतह पर, प्रत्येक देश की सतह पर और संसार की सतह पर आपस में बर्दाश्त और मुहब्बत और प्यार को पैदा करने के लिए भरपूर प्रयास करना पड़ेगी और मिल-जुल कर इस काम को करना पड़ेगा। विभिन्न कौमें हैं ,विभिन्न धर्म हैं, विभिन्न क़बीले हैं जो ख़ुदा तआला ने बनाए हैं लेकिन एक चीज़ अल्लाह तआला ने सबको कही कि तुम लोग फ़साद करने वाले लोगों की बातों में न आओ। बल्कि आपस में मुहब्बत और प्यार को बढ़ाओ और यही वह शिक्षा है जिसको हम प्रत्येक जगह फैलाते भी हैं और इस पर अमल करने का प्रयास करते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

जैसा कि मैंने और मेयर साहिब ने भी इस का प्रकटन किया कि जमाअत अहमदिया की यह मस्जिद प्रत्येक के लिए खुली है और यह निश्चित रुप से खुली है। इस लिए खुली है ताकि हमारे आपस में मुहब्बत और प्रेम के संबंध बढ़ें। यहां विभिन्न पार्लियामेंटेरियन ने भी भाषण दिया। सियासतदानों ने भाषण दिया कि अमन को बर्बाद करने वाले बहुत सारे लोग हैं जो बर्बाद करते हैं। जैसा कि मैंने कहा उनका काम ही उपद्रव फेलाना है। अत: हमने इन उपद्रवियों से बचना है और यक़ीनन एक अक़लमंद इन्सान का काम है कि उपद्रवियों से बचा जाए। और मुहब्बत और प्यार को क़ायम किया जाए। संसार ने आपस के संबंध को ख़राब करके, फ़साद पैदा करके, झगड़े और लड़ाईयां पैदा करके क्या प्राप्त किया है?

पिछले जो दो विश्व युद्ध हुए हैं उनमें हमने यही देखा कि संसार में बहुत नाश हुआ और कई दसियों मिलियन लोग इस संसार से चले गए और जंगों से अपनी जानें गंवा बैठे। अत: अमन ही असल चीज़ है और अमन से ही इन्सानियत की क़द्रें क़ायम होती हैं। और अमन क़ायम होता है मुहब्बत और प्यार और आपस के संबंध पैदा करने से और दूसरों की भावनाओं का खयाल रखने से, अत: ये बातें हैं जो हमें हमेशा याद रखनी चाहिऐं कि हमने अमन के क़ायम करने के लिए प्रत्येक सतह पर मुहब्बत और प्यार को जारी करना है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

क़ुरआन-ए-करीम अमन क़ायम करने के लिए हमें यह शिक्षा देता है कि तुमने प्रत्येक धर्म की इबादत करने वाले की हिफ़ाज़त करनी है। और प्रत्येक धर्म की इबादत-गाह की हिफ़ाज़त करनी है। क़ुरआन-ए-करीम में यही हुक्म आया है कि यदि इन फ़साद करने वाले लोगों और धर्म को ख़त्म करने वाले लोगों के हाथों को नहीं रोकोगे तो यह न तो किसी चर्च को बाक़ी रहने देंगे, न किसी synagogue को बाक़ी रहने देंगे, न किसी और इबादत के स्थान को बाक़ी रहने देंगे और न किसी मस्जिद को बाक़ी रहने देंगे। अर्थ यह है कि यहां आकर इबादत करने वालों के दिलों में उपद्रव और तनाव पैदा करेंगे। जिसके कारण से फिर यहां मस्जिदें में या इबादत के स्थानों में प्यार और मुहब्बत की शिक्षा देने की बदले में फ़साद की शिक्षा दी जाएगी। और फिर यह भी है कि ये लोग नहीं चाहते कि प्यार और मुहब्बत संसार में क़ायम हो। जब कि जितनी धार्मिक इबादत के स्थान हैं वे प्यार और मुहब्बत की शिक्षा देने के लिए क़ायम किए गए हैं। अत: क़ुरआन-ए-करीम हमें कहता है कि तुम केवल मस्जिद की हिफ़ाज़त न करो बल्कि प्रत्येक धर्म के मानने वाले की इबादत-गाह की हिफ़ाज़त करो।

अत: यह वह ख़ूबसूरत शिक्षा है जिस पर हम अमल करते हैं और यही वह हक़ीक़ी नुस्ख़ा है जो क़ुरआन-ए-करीम ने हमें दिया है। जिस से आपस में धर्मों

की मुहब्बत भी पैदा होती है और एक दूसरे से सम्बन्ध भी पैदा होता है और एक दूसरे की भावनाओ का और एहसासात का खयाल भी रखा जा सकता है। बल्कि क़ुरआन-ए-करीम तो हमें यह भी कहता है कि तुम, जो बुतों की इबादत करने वाले हैं उनके बुतों को भी बुरा न कहो क्योंकि उत्तर में वे तुम्हारे ख़ुदा को बुरा कहेंगे और फिर इसके नतीजा में संसार में तनाव पैदा होगा। और यह किसी सूरत में अल्लाह तआला को बर्दाश्त नहीं कि हक़ीक़ी मुस्लमान इस में involve हो। और जो लोग इस किस्म के कामों में ग्रस्त हैं जो उपद्रव पैदा कर रहे हैं, चाहे मुस्लमान हों वे इस्लाम की शिक्षा से हटे हुए हैं वे इस्लाम को बदनाम करने वाले हैं। इस्लाम की शिक्षा तो प्यार और मुहब्बत की शिक्षा है और जहां कहीं सख़्ती का हुक्म है तो वहां अमन और सलामती क़ायम करने के लिए सख़्ती का हुक्म है। न कि ग़लत किस्म के लाभ प्राप्त करने के लिए है। इसी तरह एक हक़ीक़ी मुस्लमान का कर्तव्य है कि समस्त दुनिया के धर्मों के जो संस्थापक हैं उनकी इज़्ज़त करे समस्त धर्मों के जो अवतार हैं उनकी इज़्ज़त करें और हम सब अवतारों को मानते हैं और सबकी इज़्ज़त और सत्कार करते हैं इसी लिए हम दूसरे धर्मों से यही निवेदन करते हैं कि आप लोग भी इस्लाम के संस्थापक सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इज़्ज़त और सत्कार करें ताकि संसार में अमन और प्यार और मुहब्बत क़ायम हो ताकि मुस्लमानों की भावनाओं चोट न लगे और मुहब्बत और प्यार की फ़िज़ा क़ायम करके एक दूसरे के प्यार को जीतने वाले बने।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

जमाअत अहमदिया के संस्थापक ने हमें बताया कि निश्चित तौर पर वे लोग जिन को अल्लाह तआला ने भेजा जो नबी बन कर आए जिन्हों ने धर्मों की बुनियाद डाली वे लोग सच्चे और नेक लोग थे। पाक और साफ़ लोग थे। अमन और प्यार और मुहब्बत करने वाले लोग थे। इसलिए करोड़ों इन्सानों ने उनको माना और उनके पीछे चले। अत: जब ऐसे लोग जिन्होंने लाखों करोड़ों इन्सानों की हालत को बदला और उनका सम्बन्ध अपने पैदा करने वाले ख़ुदा से भी पैदा किया और आपस में एक दूसरे से मुहब्बत क़ायम करने का प्रयास किया तो उन लोगों की इज़्ज़त और सत्कार करना हमारा कर्तव्य है।

अत: यह है इस मस्जिद का उद्देश्य और प्रत्येक मस्जिद का उद्देश्य जो जमाअत अहमदिया संसार में क़ायम करती है और जैसा कि मैंने कहा अल्लाह तआला के फ़ज़ल से संसार के 206 देशों में जमाअत अहमदिया क़ायम है। मस्जिदें विभिन्न शहरों में बनती हैं, विभिन्न मुल्कों में बन रही हैं। प्रान्तों में और गांव में बन रही हैं। और प्रत्येक जगह इस ख़ूबसूरत शिक्षा को हम फैलाते हैं। और यही वह ख़ूबसूरत शिक्षा है जो विभिन्न क़ौमों में आपको प्रत्येक जगह नज़र आएगी और यही जमाअत अहमदिया की ख़ूबसूरती है कि जहां भी जाएं वहां प्रत्येक अहमदी चाहे वह अफ़्रीक़ा के देशों हों या एशिया के देशों हों या अमरीका के देशों हों या यूरोप के देशों हों या फ़ार-ईस्ट के देशों हों या आस्ट्रेलिया हो या साउथ अमरीका हो। हर जगह जमाअत अहमदिया की यही ख़ूबसूरती आप को नज़र आएगी कि जमाअत जहां यह संदेश देती है कि एक ख़ुदा को पहचानो और उसकी इबादत करों वहां यह भी संदेश देती है कि आपस में मुहब्बत और प्यार और भाई चारे की फ़िज़ा पैदा करो।

**हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :**

अत: इन बातों के बाद मैं जमाअत अहमदिया के लोग को भी कहता हूँ कि अब यह मस्जिद बनने के बाद लोगों की नज़रें आप पर पहले से ज़्यादा होंगी। यह मस्जिद के दो मीनार जो आपने खड़े किए हैं ये केवल ख़ूबसूरती के लिए नहीं होने चाहिऐं बल्कि ये प्यार मुहब्बत और अमन का और ख़ुदा ए वाहिद की इबादत, ख़ुदा तआला की ख़ातिर क़ुर्बानी करने का मार्ग होने चाहिऐं। अत: हमेशा जब भी इस मस्जिद में आएं इस सोच के साथ आएं के हम ने ख़ुदा तआला की इबादत ख़ालिस हो कर करनी है और उसका हक़ अदा करना है। और आपस में भी मुहब्बत और प्यार से रहना है। आपस में भाई चारा को बढ़ाना है। अत: एक दूसरे पर सलामती भेजनी है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने फ़रमाया कि जब तुम मस्जिद में आते हो तो तुम्हारा उद्देश्य वहदत को क़ायम करना है और जब वहदत क़ायम होगी तब ही ख़ुदा ए वाहिद की इबादत करने वाले बनोगे। और वहदत उस समय क़ायम होती है जब तुम एक दूसरे का प्रभाव लेते हो। कुछ रुहानी लिहाज़ से कम होते हैं। कुछ ज़्यादा होते हैं। और जब जमाअत के तौर पर खड़े हो कर नमाज़ें पढ़ रहे होंगे। सफ़ में खड़े होंगे एक दूसरे का प्रभाव ले रहे होंगे। एक दूसरे से नूर प्राप्त कर रहे होंगे। अत: जब एक दूसरे से नूर प्राप्त करना है तो उस नूर का हिस्सा बनने के लिए स्वयं प्रयास भी करना पड़ेगी। और यही प्रयास करने होगें कि मैं अपने भाई से भी रूहानियत लूं और अपने भाई को रूहानियत दूं। और वह उसी सूरत में सम्भव है जब आप हक़ीक़ी रंग में ख़ुदा तआला की इबादत करते हुए उसका हक़ अदा करने वाले होंगे और उसके बंदों का हक़ अदा करने होंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

अल्लाह करे कि यह मस्जिद इन समस्त उद्देश्य को पूरा करने वाली हो आप लोग आपस के हुक़ूक़ भी अदा करने वाले हों। अपने ख़ुदा के हुक़ूक़ भी अदा करने वाले हों। अपने पड़ोसियों के हुक़ूक़ भी अदा करने वाले हों और इस शहर के प्रत्येक व्यक्ति का हक़ अदा करने वाले हों। और मुहब्बत और भाई चारा और प्यार और अमन की शिक्षा को इस मस्जिद को बनने के बाद पहले से ज़्यादा इस शहर में फैलाने वाले हों। जज़ाकल्लाह

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का यह भाषण सात बज कर पचपन मिनट तक चलता रहा। अंत में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला ने दुआ करवाई।

इसके बाद इस समारोह में शामिल होने वाले समस्त मेहमानों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला के साथ खाना खाया।

मस्जिद बैयतुल उल-वाहिद के इस उद्घाटन समारोह में 124 मेहमान शामिल हुए जिनमें लार्ड मेयर HANAU शहर CLAUS KAMINSKY प्रान्त HESSEN के एक ज़िलई कमिशनर ERIC PIPA साहिब, जर्मन नैशनल पार्लियामेंट के तीन मेंबर्ज़ BETTINA MULLER साहिबा KORDULA SCHULZ ASCHF साहिबा, CHRISTINE BUCHHOLZ साहिब और इसके अतिरिक्त विभिन्न सरकारी अफ़सर, वकील डाक्टरज़, इंजीनीयर्ज़, अध्यापक, जर्नलिस्ट्स और जीवन के विभिन्न विभागों से सम्बन्ध रखने वाले लोग शामिल हुए।

RTL टैलीविज़न के जर्नलिस्ट और उनकी टीम मस्जिद के उद्घाटन समारोह की COVERAGE के लिए आई हुई थी। समारोह के अंत पर यह टीम स्टेज पर आ गई और हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का इन्टरव्यू लिया।

जर्नलिस्ट ने एक प्रश्न यह किया कि अहमदिया कम्यूनिटी रवादारी और भाई चारा को समाज मैं किस तरह प्रोमोट करती है?

इस प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया हम तो हमेशा ही पूरे संसार में यही संदेश फैला रहे हैं कि इस्लाम रवादारी है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का उदाहरण देते हुए हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला ने फ़रमाया कि आप पर और आप के मानने वालों पर इतना अत्याचार हुआ कि आप को मक्का छोड़ कर मदीना जाना पड़ा। वहां भी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर और आपके मानने वालों पर अत्याचारों का सिलसिला जारी रहा और जब दुश्मन जंग पर उतर आया आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को दिफ़ाई जंग का हुक्म मिला। और यह हुक्म इस लिए नहीं था कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम केवल इस्लाम को बचाएं। या केवल मुस्लमानों को बचाएं बल्कि इसलिए था कि समस्त धर्मों की इबादत-गाहों, मस्जिदों, चर्चिज़, SYNAGOGUE को बचा लें और यह हुक्म धार्मिक आज़ादी को क़ायम करने के लिए था।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला ने फ़रमाया हम तो धार्मिक भाईचारे के क़ियाम के लिए प्रत्येक समय प्रयास करते हैं। लंदन में एक रीलीजस कान्फ्रैंस का आयोजन किया था GOD IN 21ST CENTURY शीर्षक था। इस में ईसाई, यहूदी, हिंदू, दरोज़ी, और दूसरे धर्मों के लीडर आए थे और सबने अपने अपने धर्म के हवाला से ऐडरैस किया था। इस कान्फ्रैंस का यही उद्देश्य था कि हम सब रवादारी, भाई चारे और अमन की बातें करें और अमन का क़ियाम हो।

(शेष .....)

☆ ☆ ☆ ☆

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 6 Thursday 15 April 2021 Issue No.15

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

पृष्ठ 1 का शेष

अलैहि वसल्लम की सच्चाई पर यह क्या दलील प्रस्तुत करेंगे? एक मुसलमान, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे अनुयायी के मुँह से जब वह इतना लम्बा समय एक दावा करने वाले को मोहलत पाते हुए देख ले कभी यह नहीं निकल सकता कि झूठा और काज़िब भी इतने लम्बे समय की मोहलत पा लेता है। यदि और कोई भी निशान और तर्क ऐसे मुद्दई की सच्चाई का न मिले तब भी एक सच्चे मुसलमान को सुधारणा और ईमानदारी के दृष्टि से अनिवार्य आता है कि इन्कार न करे,क्योंकि उसका ज़माना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने से सदृश्य हो गया है।

यदि कोई ईसाई कहे कि झूठ बालने वाले को छूट मिल सकती है तो वह इस बात का प्रमाण दे परन्तु मुसलमान तो ऐसा कह ही नहीं सकता। अत: अब हमारे विरोधी बतलाएं कि एक काज़िब दज्जाल, अल्लाह तआला पर झूठ बालने वाला नबुव्वत के तरीका में शरीक हो सकता है? स्वीकार करना पड़ेगा कि हरगिज़ नहीं। फिर वह हमारे दावे को सोचें और इस ज़माना पर विचार करें जो नबुव्वत के इस्तिदलाल का ज़माना है। अत: हर पहलू में बहुत सी बातें हैं जो सोचने वाले को मिल सकती हैं और एक दूर का सोचने वाला उनसे लाभ उठा सकता है।

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 274 प्रकाशन कादियान)

☆ ☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को बूढ़ा कर दिया। क्या नबियों के क़िस्सों और उम्मतों की हलाकत ने? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया नहीं बल्कि आयत فَاسْتَقِمْ كَمَا أُمِرْتَ ने मुझे बूढ़ा कर दिया और दारमी ने और अबू दाऊद ने अपनी मरासील में और बीहक़ी ने शेबुल ईमान में काअब रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की है कि रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया اِقْرَؤُا الْهُوْدَ يُوْمَ الْجُمُعَةِ सूरत हूद को जुमा के दिन पढ़ा करो। इससे भी मालूम होता है कि यह आयत निज़ाम-ए-जमाअत के साथ सम्बन्ध रखती है क्योंकि जुमा का दिन भी इज्तिमा का दिन होता है।

क्या विचित्र बात है कि जिस सूरत ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जैसे बड़े ह्रदय वाले पर इतना प्रभाव डाला कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बुढ़ापे से पहले ही बूढ़े हो गए वह हम पर कोई असर न करे हालाँकि हमें आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से ज़्यादा डरना चाहीए था ताकि इस काम में कामयाब हों जो हमारे सामने है।

असल बात यह है कि इस्लाम केवल व्यक्तिगत सफ़लता का क़ायल नहीं। यदि हम सारी क़ौम को हर रंग में नहीं बढ़ाते तो मानो कि हम सफ़ल ही नहीं हुए। لاتطغوا - में इसी ओर संकेत फ़रमाया है कि क़ौम की ख़बर नहीं लेना अत्याचार है क्योंकि ख़बर नहीं लेने से बुराई फिर लोट कर आती है। एक आदमी का उच्च स्थान तक पहुंच जाना दुनिया के लिए इतना लाभदायक नहीं क्योंकि उसके मरते ही वही अंधकार फैल जाएगी। सफ़लता यह है कि सब सही रास्ते को इख़तियार कर लें ताकि बुराई का सिर कुचला जाए परन्तु अफ़सोस है कि इस तालीम के अतिरिक्त मुस्लमान न केवल धार्मिक ज्ञान में पीछे रह गए हैं बल्कि दुनियावी ज्ञान और प्रगतियों में भी बिल्कुल बे-ख़बर हैं। वे मानव जाती की भलाई में भी बहुत कम हिस्सा लेते हैं जबकि दूसरी क़ौमों के बहादुर हर विभाग में ज्ञान में तरक़्क़ी करने की कोशिश कर रहे हैं।

(तफ़सीर कबीर, भाग 3, पृष्ठ 265 प्रकाशन क़ादियान 2010)

☆ ☆ ☆ ☆

# सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान में दर्जा दौम (दुसरी श्रेणी) की नौकरी पर ख़िदमत की इच्छा रखने वाले ध्यान दें

**शर्तें (1)** प्रत्याशी की आयु 25 वर्ष से अधिक न हो (2) प्रत्याशी की शिक्षा कम से कम10+2 (45 प्रतिशत अंको के साथ) होनी चाहीए (3) प्रत्याशी उर्दू/ अंग्रेज़ी कम्पोज़िंग जानता हो। प्रति मिनट में 25 शब्दों की कम्पोज़िंग की तीव्रता हो। (4) इस विज्ञपन के बाद 2 महीने के अंदर जो निवेदन आएंगे उन्हीं पर ग़ौर होगा (5) निमंलिखित निसाब के अनुसार परीक्षा ली जाएगी, परीक्षा के हर भाग में सफ़ल होना अनिवार्य है।

**भाग प्रथम :** क़ुरआन-ए-करीम सादा पूर्ण, पहला पारा अनुवाद के साथ चालीस जवाहर पारे, अरकान-ए-इस्लाम, नमाज़ मुकम्मल अनुवाद के साथ (30 अंक)

**भाग दो :** कशती नूह, बरकात दुआ, दीनी मालूमात लेख जमाअत अहमदिया के सिद्धानोतों के बारे में

नज़्म दुर्रे समीन (शाने इस्लाम) (20अंक)

**भाग तीन** : अंग्रेज़ी का मयार बारवी कक्षा तक के अनुसार (10+2 )(20अंक)

**भाग चार** गणित दसवी कक्षा तक के अनुसार (20अंक)

**भाग पांच** साधारण ज्ञान (10अंक)

(6) लीखित परीक्षा में सफ़ल होने वाले प्रत्याशी का ही इंटरव्यू होगा (7) लीखित परीक्षा, कम्पयूटर टैस्ट-और-इंटरव्यू में सफ़लता की अवस्था में उम्मीदवार को नूर हस्पताल क़ादियान से चिकित्सा परीक्षण करवाना होगा और केवल वही उम्मीदवार सेवा के योग्य होंगे जो नूर हस्पताल के चिकित्सा परीक्षण बोर्ड की रिपोर्ट के अनुसार सेहत मंद और तंदरुस्त होंगे (8) स्लैक्शन की अवस्था में उम्मीदवार को क़ादियान में अपनी रिहायश की व्यवस्था स्वयं करनी होगी (9) क़ादियान आने जाने का खर्च प्रत्याशी के अपने ज़िम्मा होंगे। (नोट : लिखित परीक्षा और साक्षात्कार की तिथि से प्रत्याशीयों को बाद में अवगत किया जाएगा।

अधिक मालूमात के लिए संपर्क करें : नज़ारत दीवान सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान पिन कोड 143516 -

मोबाइल : 09682627592 09682587713, दफ़्तर : 01872 - 501130

E-mail: diwan@qadian.in

☆ ☆ ☆ ☆

**इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें**

**नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :**
**1800 103 2131**
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

## हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

**खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।**

## तालिबे दुआ

**Sohail Ahmad Nasir and Family**
Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad